श्री शिव उपासना



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

श्री शिव उपासना



पं० राजेश दीक्षित

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव उपासना

श्री शिव शंकर की महिमा, पूजन-विधिं. मन्त्र-यन्त्र, आरती, चालीसा, स्तोत्र, कवच आदि का अनुपम ऐसा संकलन जिसके सहारे कोई भी शिव-भक्त शीघ्र ही शिवजी को प्रसन्न कर कल्याण को प्राप्त हो सकता है।

लेखक

राजेश दीक्षित



1936 में स्थापित, विश्वविख्यात, चिर-परिचित, पुराना प्रकाशक, पुराना ही नाम

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006.

फोन : 261030

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)
चावड़ी बाजार, दिल्ली-110006
फोन : 261030

सम्पादक
पं० राजेश दीक्षित

मूल्य :
स्वदेश में : 8/25 (सवा आठ रुपये)
विदेश में : 1 £ (एक पौंड) या
2 $ (दो डालर)

Printed at
Vijeta Offset Printers,
3545, Jatwara. Daryaganj,
New Delhi-110002

SHRI SHIV UPASANA BY PT. RAJESH DIXIT

दो शब्द

देवाधिदेव महादेव भगवान् शङ्कर अखिल जगत् के स्वामी तथा अशुतोष औढरदानी हैं। शिवपुराण, विष्णुपुराण तथा अन्य ग्रन्थों में उनकी महिमा का विस्तृत वर्णन किया गया है। समुद्र-मंथन के समय उत्पन्न हलाहल-विष की ज्वाला से दग्ध होते हुए अखिल ब्रह्माण्ड की रक्षा कर, भूतभावन शिवजी ने स्वयं ही उस महागरल का पान करके 'नीलकण्ठ' नाम धारण किया था। ऐसे कृपालु भक्त वत्सल की महिमा का जितना गान किया जाय कम है।

● शिवजी के तीन नेत्र हैं। उनका तीसरा नेत्र तब खुलता है जब वे किसी को भस्म करना चाहते हैं। एक बार कामदेव ने जब तपस्यारत शिवजी की समाधि में विघ्न उपस्थित किया, तब शिवजी ने अपने तीसरे नेत्र को खोल कर, उसकी ज्वाला से कामदेव को भस्म कर दिया था। इसीलिए शिवजी को 'कामारि' भी कहा जाता है।

● शिवजी बाघम्बर पहनते हैं। उनके मस्तक पर जटाजूट तथा गले में मुण्ड एवं रुद्राक्ष की मालाएं पड़ी रहती हैं। वे अपने सम्पूर्ण शरीर पर भस्म का लेप करते हैं तथा ललाट पर भस्म का ही त्रिपुण्ड लगाते हैं। उनके जटाजूट में गंगाजी का निवास है तथा मस्तक पर द्वितीया का चन्द्रमा सुशोभित रहता है। वे सर्पों की माला पहनते हैं। डमरू उनका प्रिय वाद्य है। उनका वाहन नन्दी नामक बैल तथा आयुध त्रिशूल है। कभी-कभी वे 'पिनाक' नामक धनुष भी धारण करते हैं।

● शिवजी का पहला विवाह दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के साथ हुआ था। दक्ष यज्ञ में प्राणों को आहुति दे देने के बाद सती ने ही पर्वतराज हिमालय की पुत्री के रूप में पार्वती नाम से दूसरा जन्म लिया। तब उनका विवाह भी शिवजी के साथ ही हुआ था।

● शिवजी के गणों में भूत, प्रेत, पिशाच आदि की अधिकता है। यों ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र आदि सभी देवता तथा सभी दैत्य, दानव आदि शिवजी की समान रूप से भक्ति करते हैं। शिवजी औढरदानी प्रसिद्ध हैं। आशुतोष होने के कारण वे अपने भक्तों पर शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं और उन्हें इच्छित वर प्रदान करते हैं।

शिवजी के दो पुत्र हैं—स्वामिकार्तिकेय और गणेश। स्वामिकार्तिकेय देवताओं के सेनापति हैं। गणेश जी विद्या बुद्धि के अधिष्ठातृ देवता हैं। शिवजी के गणों में वीरभद्र आदि के नाम प्रसिद्ध हैं।

● शिवजी समय-समय पर अवतार भी लेते हैं। श्री भैरव तथा हनुमान जी को शिवजी का ही अवतार मानां जाता है। दुर्गा, काली आदि देवियों को शिव-पत्नी उमा की प्रतिरूपा माना जाता है।

● शिव लिङ्ग के पूजन का सम्पूर्ण भारत में प्रचलन है। काशी को शिव की प्रिय नगरी माना जाता है। शिवजी के लीला-चरित्रों का विशद् वर्णन शिवपुराण, लिङ्ग पुराण तथा अन्य पुरानों में पाया जाता है। फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी को 'महाशिव रात्रि व्रत' का उत्सव सब जगह मनाया जाता है।

● प्रस्तुत पुस्तक में भगवान श्री शिव के लीला-चरित्र एवं माहात्म्य के अतिरिक्त उनकी पूजनविधि, यन्त्र, मन्त्र, आरती, चालीसा स्तोत्र आदि का सङ्कलन किया गया है। आशा है शिव भक्तों लिए यह पुस्तक उपादेय एव रुचिकर सिद्ध होगी।

कृष्णापुरी, मथुरा
चंद्रपूर्णिमा, सं 2032 वि०

—राजेश दीक्षित

अनुक्रमणिका

कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानी सहितं नमामि ॥

उपासना तथा धार्मिक पूजा-पाठ की पुस्तकें

● दुर्गा उपासना (दुर्गा पूजा) (ले०—राजेश दीक्षित) मूल्य 8/25

इस पुस्तक में सर्वपूज्य माँ भगवती को प्रसन्न करने के लिए निर्वाण-मन्त्र, जपविधि, पूजाविधान और अनुष्ठान, देवी के सभी रूप महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती आदि से सम्बन्धित स्तोत्र, आरती, पद, भजन, आदि का विराट संकलन है।

● शिव उपासना (शिव पूजा) (ले०—राजेश दीक्षित) मूल्य 8/25

प्रस्तुत पुस्तक में भगवान् सदाशिव की प्रशंसा में गाये गए भक्ति-भावपूर्ण चुने हुए और रसीले पदों, भजनों, आरतियों और स्तोत्रों का अपूर्व संग्रह है।

● श्री गायत्री उपासना (गायत्री पूजा) (ले०—राजेश दीक्षित) मू० 8/25

वेदमाता जगद्धात्री देवी गायत्री की पौराणिक कथा तथा पूजा आराधना उपासना, विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, भजन, आरती, चालीसा आदि का बृहद् संकलन।

● हनुमान उपासना (हनुमान पूजा) (ले० – रामकृष्णदास) मूल्य 8/25

इस पुस्तक में हनुमान जी का जीवन-चरित्र, भक्ति उत्पन्न करने में सहायक कथा, भजनों, पदों स्तुतियों और आरतियों का संग्रह दिया गया है।

● विष्णु उपासना (विष्णु पूजा) (ले०—राजेश दीक्षित) मूल्य 12/-

सम्पूर्ण चराचर के स्वामी चतुर्भुज शेषशायी भगवान् श्री विष्णु की पौराणिक कथा, पूजा, आराधना, उपासना, ध्यान एवं स्तुति विषयक यन्त्र मन्त्र, स्तोत्र, कवच, भजन आरती, चालीसा आदि का बृहद् संकलन।

● श्री वैष्णोदेवी उपासना (वैष्णोदेवी पूजा) (ले०—राजेश दीक्षित) मू० 8/25

हिमगिरि वासिनी भगवती वैष्णवी देवी की पौराणिक कथा तथा पूजा आराधना, उपासना, विषयक यन्त्र, मन्त्र, स्तोत्र, भजन आरती, चालीसा आदि का बृहद् संकलन।

● पूनम कीर्तन सागर अर्थात् भक्तों का खजाना मूल्य 4/50

इस पुस्तक में कीर्तन, भजन, पद, स्तुति, गीत आदि दिए गए हैं। वस्तुतः यह पुस्तक कीर्तन करने वालों तथा भक्तों—सभी के लिये संग्राह्य है। लोक परलोक को सफल बनाने वाले तथा भक्तों का तो यह सचमुच खजाना ही है।

● सचित्र वैष्णोदेवी यात्रा माहात्म्य (ले०—राजेश दीक्षित) मूल्य 8/25

भगवती वैष्णो देवी की यात्रा तथा माहात्म्य का सचित्र, सम्पूर्ण एवं विस्तृत वर्णन इस पुस्तक में दिया गया है। साथ ही भजन, टप्पे आदि भी हैं।

● संतोषी माता शुक्रवार व्रत कथा मूल्य 3.00

सन्तोषी माता का व्रत शुक्रवार को किया जाता है। कथा, पूजा विधि व सामग्री आरती सभी इस पुस्तक में दिया गया है।

पुस्तकें मिलने का पता—देहाती पुस्तक भण्डार. चावड़ी बाजार, दिल्ली-6



SHIV ASHIRVAD

S. S. BRIJBASI & SONS

श्री शिव-महिमा

निराकार परब्रह्म परमात्मा ही अपने (1) ब्रह्मा (2) विष्णु एवं (3) शिव इन तीन रूपों द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय का दायित्व वहन करता है। भगवान् शिव तो साक्षात् परब्रह्म ही हैं।

एक समय ब्रह्मा और विष्णु में विवाद छिड़ा कि हम दोनों में से बड़ा कौन है ? उसी समय उनके मध्य एक ज्योतिर्लिंग प्रकट हुआ। उसका विस्तार अनन्त अपार था। ब्रह्मा विष्णु पहले तो उसे देखकर आश्चर्यचकित हुए, फिर उन्होंने परस्पर यह निश्चित किया कि हम दोनों में से जो कोई इस ज्योतिर्लिंग के ओर-छोर का पता लगा लायेगा, वही बड़ा माना जायेगा। निदान वे दोनों ही उस दिव्य प्रकाश-स्तम्भ के आदि अन्त का पता लगाने के लिए एक-एक ओर को चल दिये। परन्तु दिव्य सहस्र वर्षों तक प्रयत्न करते रहने पर भी उनमें से किसी को भी उस प्रकाश-स्तम्भ के ओर-छोर का कुछ पता नहीं चला। अन्ततः विष्णु ने तो स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार कर लिया कि मैं इसके ओर-छोर का पता नहीं लगा पाया, परन्तु शिवजी की माया से भ्रमित ब्रह्मा ने झूठ बोलते हुए यह कहा कि मैंने इसके छोर का पता लगा लिया है। और प्रत्यक्षदर्शी गवाह के रूप में उन्होंने मिथ्यावादिनी केतकी को भी प्रस्तुत कर दिया। उसी समय यह आकाशवाणी हुई कि ब्रह्मा तथा केतकी दोनों ही झूठ बोल रहे हैं। उसे सुनकर ब्रह्मा अत्यन्त लज्जित हो, भय से थर-थर काँपने लगे।

जिस समय ब्रह्मा और विष्णु अपने मन में यह सोच रहे थे कि यह आकाशवाणी करने वाला कौन है, तभी त्रिशूलपाणि भगवान् शंकर सहसा ही उन दोनों के मध्य प्रकट हो गये और बोले—हे ब्रह्मा ! हे विष्णु ! तुम आपस में व्यर्थ ही विवाद कर रहे हो। इस सृष्टि का उत्पत्तिकर्त्ता, आदि-कारण तथा स्वामी मैं ही हूं। मैंने तुम दोनों को भी उत्पन्न किया है।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये तीनों मेरे ही स्वरूप हैं । मैंने तुम लोगों को अपनी शक्ति का यथार्थ ज्ञान कराने के लिए ही उस ज्योतिर्लिंग को प्रकट किया था, जिसका ओर-छोर तुममें से कोई नहीं पा सका । ब्रह्मा तथा केतकी ने झूठ बोला है, अतः इन्हें उसका दण्ड भोगना पड़ेगा । केतकी को तो मेरी पूजा में स्थान नहीं मिलेगा और ब्रह्मा को भविष्य में फिर कभी पछताना पड़ेगा । अस्तु, अब तुम अपने अहंकार को त्याग दो ।

इतना कहकर शिवजी अन्तर्ध्यान हो गये तथा ब्रह्मा को अपनी भूल का बड़ा दुःख हुआ । ब्रह्मा तथा विष्णु दोनों ही शिवजी की स्तुति करने लगे ।

सती-चरित्र

एक बार प्रयागराज में ऋषि-मुनियों ने एक बड़ा यज्ञ किया, जिसमें भाग लेने के हेतु सभी देवी-देवता एकत्र हुए । भगवान् शिवजी वहां सर्वोच्च आसन पर विराजमान थे । बाद में दक्ष प्रजापति भी उस यज्ञ-स्थल में पहुंचे । दक्ष ब्रह्मा के पुत्र थे, उनकी पुत्री सती का विवाह शिवजी के साथ हुआ था और वे सम्पूर्ण सृष्टि के प्रजापति पद पर चुने गये थे ।

शिवजी को उच्चासन पर बैठे देखकर अहंकारी दक्ष ने अज्ञानवश शिवजी के प्रति अपशब्दों का प्रयोग किया और कहा कि इस पाखण्डी ने मुझे प्रणाम नहीं किया, अतः मैं इसे शाप देता हूं कि यह श्मशानवासी आज से देवताओं के यज्ञ में भाग प्राप्त करने का अधिकारी न रहे ।

दक्ष के शाप को सुनकर नन्दीश्वर अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे और दक्ष से बोले, 'अरे मूढ़ ! तूने पवित्रता को भी पवित्र करने वाले भगवान् शंकर को शाप देने की मूर्खता क्यों की ? तुझे ऐसा करना उचित नहीं था ।'

यह सुन कर दक्ष प्रजापति ने नन्दी को भी शाप देते हुए कहा कि हे नन्दी ! तुम सभी शिवगण पाखंडी हो, अतः मैं तुम सभी को यह शाप देता हूं कि तुम वेद से बाहर रहकर जटा, भस्म एवं अस्थि धारण करने वाले बनोगे ।

दक्ष के शाप को सुनकर नन्दी ने भी क्रोध में भर कर दक्ष को यह शाप दिया कि तुम ब्राह्मण लोग भी आज से सकाम-अनुष्ठान करने वाले तथा

भिक्षावृत्ति करने वाले बनोगे और तुम्हारे जिस मुख ने शिवजी की निन्दा की है, वह मुख बकरे जैसा हो जायगा।

इस प्रकार दक्ष तथा नन्दी ने जब एक दूसरे को शाप दिया तो सभा-मण्डप में हाहाकार मच गया, परन्तु शिवजी ने सभी को सान्त्वना देते हुए नन्दीश्वर का क्रोध शान्त किया तथा स्वयं अपने गणों सहित उस यज्ञ को त्याग कर चले गये।

कालान्तर में दक्ष प्रजापति ने स्वयं कनखल तीर्थ में एक महायज्ञ प्रारंभ किया, जिसमें उन्होंने अन्य सब देवताओं तथा ऋषि-मुनियों को तो बुलाया परन्तु शिवजी को तथा अपनी पुत्री सती को निमन्त्रण तक नहीं भेजा। यज्ञ-स्थल में शिवजी को अनुपस्थित देखकर महात्मा दधीचि ने यह भविष्य-वाणी की कि यदि शिवजी यहाँ नहीं आये तो यह यज्ञ अधूरा ही रह जायेगा। परन्तु दक्ष ने किसी के सुझाव पर ध्यान नहीं दिया। तब दधीचि तथा अन्य बहुत से शिवभक्त उस यज्ञस्थल से उठकर चले गये।

सती को जब यह ज्ञात हुआ कि उनके पिता दक्ष ने शिवजी को अपमानित करने के उद्देश्य से ही यज्ञ में आमंत्रित नहीं किया है, तो वे बिना बुलाये ही उस यज्ञ में जा पहुंचीं और उन्होंने यज्ञ कुण्ड में कूद कर अपने प्राणों की आहुति दे दी।

सती के प्राण त्यागते ही उनके साथ आये हुए शिवगणों ने यज्ञ को नष्ट-भ्रष्ट करना आरंभ कर दिया। उस समय महर्षि भृगु ने यज्ञकुण्ड से एक सहस्त्र ऋभव वीरों को उत्पन्न कर दिया। उन वीरों ने समस्त शिवगणों का संहार कर डाला। जब शिवजी को यह समाचार मिला कि उनके गण मारे गये हैं तो उन्होंने क्रोध में भर कर अपनी एक जटा को उखाड़ कर पर्वत पर पटक दिया। उससे वीरभद्र की उत्पत्ति हुई। फिर शिवजी की आज्ञा पाकर वीरभद्र ने दक्ष के यक्षस्थल में पहुँचकर प्रलय जैसा दृश्य उपस्थित कर दिया। भृगु ऋषि की दाढ़ी उखाड़ ली तथा दक्ष का सिर काट कर यज्ञ-कुण्ड में डाल दिया। अन्य लोगों को भी समुचित दण्ड दिया। अन्त में ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं की प्रार्थना पर शिवजी उस यज्ञ-मण्डप में उपस्थित हुए और उन्होंने वीरभद्र को शान्त किया। जब दक्ष ने अपने अपराधों की

क्षमा माँगी तब शिवजी ने उसके मस्तक पर बकरे का सिर रख कर उसे पुनर्जीवित कर दिया तथा यज्ञ को भी सकुशल सम्पन्न करा दिया।

दक्ष के यज्ञ में प्राण त्याग देने के बाद सती ने पर्वतराज हिमाचल के घर पुत्री के रूप में जन्म लिया, जहाँ उनका नाम पार्वती रखा गया। कालान्तर में पार्वती का विवाह शिवजी के साथ हो गया। उनकी कोख से उत्पन्न पुत्र स्वामि कार्तिकेय ने तारकासुर नामक भयंकर राक्षस को मार कर तीनों भुवनों में शान्ति स्थापित की।

इस प्रकार शिवजी ने समय-समय पर अनेक लीला-चरित्र कर, भक्तों को आनन्द तथा दुष्टजनों को दण्ड दिया है। शिवजी ने समय-समय पर अवतार भी लिए हैं।

शक्ति-पीठ

सती की मृत-देह को विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से कई टुकड़ों में काट दिया था। वे टुकड़े, जहाँ-जहाँ गिरे वहीं-वहीं शक्ति-पीठों की स्थापना हुई। शक्ति-पीठों की कुल संख्या 51 है।

भस्म, रुद्राक्ष और बिल्वपत्र

शिवजी की उपासना में भस्म, रुद्राक्ष तथा बिल्वपत्र का विशेष महत्त्व है। भस्म को सम्पूर्ण शरीर पर लगाया जाता है। रुद्राक्ष गले में पहिना जाता है तथा बिल्वपत्र को शिवजी पर चढ़ाया जाता है। शिवजी की पूजा में धतूरे के फल तथा धतूरा, आम एवं कनेर के पुष्प अधिक प्रयोग में लाये जाते हैं।

विभिन्न स्थानों पर भगवान् शिव के द्वादश ज्योतिलिंग स्थापित हैं। उनका दर्शन, पूजन तथा ध्यान समस्त पापों को क्षय करने वाला है।

शिवजी के अनेक व्रत हैं, परन्तु माघ मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को 'महाशिवरात्रि' का व्रत सर्वोच्च माना गया है।

शिवजी के मन्त्रों में 'महामृत्युंजय' एवं 'त्र्यम्बक' का विशेष स्थान है।

प्रत्येक वर्ण तथा आयु के स्त्री-पुरुष शिवजी का व्रत, पूजन, ध्यान, उपासना आदि करने के अधिकारी हैं।

सक्षिप्त पूजा-विधि

प्रातःकाल उठकर शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, शुद्ध किए स्थान में पवित्र आसन पर बैठ, शुद्ध हृदय से शिवजी का ध्यान करे। तत्पश्चात् आगे लिखे हुए स्वस्तिवाचनादि यथाक्रम से पूजन प्रारम्भ करे।

पूजा स्थल पर शिव-पूजन यन्त्र आटा, चावल, रोली आदि से बना लेना चाहिए, जिसके मध्य में दो त्रिभुज परस्पर काटते हुए षट्कोण बना ले। उनके बाह्य भाग में अष्टदल बनाये। यदि उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवा लिया जाए तो बार-बार उपयोग में लिया जा सकता है। पूजन समाप्त होने पर आरती, चालीसा, स्तोत्र आदि का पाठ करना चाहिए। पूजा का क्रम इस प्रकार है।

स्वस्ति-वाचन

"ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाःविश्व-वेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो वृहस्पति-र्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्य-न्तरिक्षे पयोधाः। पयःस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रो देवता ऽऽदित्यादेवता मरुतोदेवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥४॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष्ँ शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः

सर्वं शान्तिः वनस्पतयः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि। ॐ विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव शान्ति र्भवतु ॥" ॥५॥

उक्त 'स्वस्ति वाचन' में जहाँ-जहाँ इस प्रकार का चिह्न है, वहाँ 'ग्वं' की भाँति उच्चारण करना चाहिये। 'स्वस्तिवाचन' पाठ के बाद नीचे लिखे मन्त्र का उच्चारण करते हुए जल से आचमन करें। तथा अपने मस्तक पर तीन वार जल छिड़कें। तत्पश्चात् दोनों हाथों को धो लें। आचमन करते तथा जल छिड़कते समय "ओ३म् केशवाय नमः स्वाहा। ओ३म् नारायणाय नमः। ओ३म् माधवाय नमः स्वाहा।" इन मन्त्रों का उच्चारण करते जाना चाहिये।

पवित्री करणका मन्त्र

"ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतो पिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥"

उक्त मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचमन आदि करें। 'पवित्री करण' के उपरान्त निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भूत-शुद्धि' करें।

भूत-शुद्धि का मन्त्र

"ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥"

'भूत-शुद्धि' के उपरान्त दायें हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प तथा जल लेकर अग्रलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए विघ्न-विनाशक 'श्री गणेशजी का ध्यान' करें—

श्रीगणेश-ध्यान मन्त्र

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणु यादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे, निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नतस्य न जायते ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनंध्यायेत्सर्वविघ्नोपशायन्ते ।।"

उक्त मन्त्रों उच्चारण कर, हाथ में दूर्वा, अक्षत, पुष्प आदि को श्रीगणेश जी के उद्देश्य से अपने अग्र भाग में छोड़ दें। पुनः दायें हाथ में तिल, कुश, जल तथा यज्ञोपवीत लेकर नीचे लिखे 'संकल्प वाक्य' का उच्चारण करें।

संकल्प-वाक्य

"हरिः ॐ तत्सत् । नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवते महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय प्रहरार्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखंडे भारतवर्षे आर्य्यावर्तान्तर्गत क्षेत्रे षष्टि-संवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने,

'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'अमुक' वासरे, 'अमुक' राशिस्थे सूर्ये चन्द्रे भौमे बुधे वृहस्पतौ शुक्रे शनौ राहौ केतौ एवं गुण विशिष्टायां तिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम्नि शर्मा (वर्मादि) ऽहं धर्मार्थ काम मोक्ष हेतवे श्रीगणपति पूजनमहं करिष्ये।"

उक्त संकल्प-वाक्य में जहां-जहां 'अमुक' शब्द आया है, वहां क्रमश: विद्यमान संवत्सर, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, नक्षत्र, योग, दिन, सूर्यादि नवग्रहों की स्थिति वाली राशियों के नाम, अपने गोत्र तथा अपने नाम का उच्चारण करना चाहिये। ब्राह्मण को 'शर्माऽहं', क्षत्रिय को 'वर्माऽहं', वैश्य को 'गुप्तोऽहं' तथा शूद्र को 'दासोऽहं' शब्द का उच्चारण करना चाहिये।

'संकल्प-वाक्य' के पश्चात् सर्वप्रथम नीचे लिखे मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अपने इष्टदेव श्री शिवजी का 'ध्यान' करना चाहिए—

ध्यान के मन्त्र

"ध्यायेन्नित्यं सुरेऽयंयतिगतिमतिदं
योगकाधारमेक-
माद्यंतादिप्रभावं निगमजनिजुषां
ध्यानधारावगम्यम्
सोमं सोढारमीशंधरणिसुरवर
याञ्चया शंकरंतं

भक्त्युद्रेकाय वर्गं कलयति विदुषां
यत्कृपा तंहि शम्भुम् ॥१॥
वन्धूकसन्निभन्देवं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
त्रिशूलधारिणन्देवं चारुहासं सुनिर्मलम् ॥ २ ॥
कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम् ।
उमयासहितं शम्भुन्ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥ ३ ॥
सानन्दमानन्दवनेवसन्त
मानन्दकन्दंहतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं
श्री विश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥४॥

ॐ नमः शम्भवायच मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च । शिवाय नमः ॥५॥"

आवाहन का मन्त्र

"आयाहि भगवन् शम्भो शर्वत्वं गिरिजापते ।
प्रसन्नोभव देवेश नमस्तुभ्यं हि शङ्कर ॥"

उक्त मन्त्र द्वारा श्री शिवजी का 'आवाहन' करने के पश्चात् उन्हें 'आसन प्रदान करने के हेतु अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करें—

आसन का मन्त्र

"विश्वेश्वरमहादेव राजराजेश्वरप्रिय ।
आसनंन्दिव्यमीशान दास्येऽहन्तुभ्यमीश्वरम् ।।"

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पाद्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

पाद्य का मन्त्र

"महादेव महेशान महादेव परात्पर ।
पाद्यं गृहाणमद्दत्तं पार्वती सहितेश्वर।।"

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अर्घ्य' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

अर्घ्य का मन्त्र

"त्र्यम्बकेश सदाचार जगदादिविधायक ।
अर्घ्यं गृहाण देवेश साम्ब सर्वार्थदायक ।।"

'अर्घ्यं' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय' के रूप में पृथ्वी पर जल का निक्षेप करें—

आचमनीय का मन्त्र

"त्रिपुरान्तक दीनार्तिहर श्रीकण्ठ शाश्वत ।
गृहाणाचमनीयं च पवित्रोदक कल्पितम् ।।"

'आचमनीय' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'गोदुग्ध स्नान' करायें—

गोदुग्ध-स्नान का मन्त्र

"मधुरं गोपयः पुण्यं पटपूतं पुरस्कृतम् ।
स्नानार्थं देवदेवेश गृहाण परमेश्वर ॥"

'गोदुग्ध' स्नान के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दधि-स्नान' करायें—

दधि-स्नान का मन्त्र

"दुर्लभन्दिविसुस्वादु दधिसर्वप्रियम्परम् ।
तुष्टिदम्पार्वतीनाथ स्नानाय प्रतिगृह्यताम् ॥"

'दधि-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'घृत-स्नान' करायें—

घृत-स्नान का मंन्त्र

"घृतं गव्यं शुचिस्निग्धं सुसेव्यं पुष्टिदायकम् ।
गृहाण गिरिजानाथ स्नानाय चन्द्रशेखर ॥"

'घृत-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'मधु-स्नान' करायें—

मधु-स्नान का मन्त्रं

"मधुर मृदु मोहघ्नं स्वरभङ्ग विनाशनम् ।
महादेवे दुमुत्सृष्टं तवस्नानाय शङ्कर ॥"

'मधु-स्नान' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शर्करा-स्नान' करायें—

शर्करा-स्नान का मन्त्र

"तापशान्तिकरी शीरा मधुरास्वाद संयुता ।
स्नानार्थं देव देवेश शर्करेयं प्रदीयते ।।"

'शर्करा-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'शुद्ध जल से स्नान' करायें—

शुद्धोदक स्नान का मन्त्र

"गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा ।
सरस्वत्यादि तीर्थानि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।"

'शुद्धोदक स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'वस्त्र' समर्पित करें—

वस्त्र का मन्त्र

"वस्त्राणि पट्टकूलानि विचित्राणि नवानि च ।
मयानीतानि देवेश प्रसन्नोभव शङ्कर ।।"

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए "उपवीत' समर्पित करें—

उपवीत का मन्त्र

"सौवर्णं राजतं ताम्रं कार्पासस्य तथैव च ।
उपवीतम्मयां दत्तं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ।।"

'उपवीत' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए

'गन्ध' समर्पित करें। शिवजी के प्रति श्वेत चन्दन समर्पित करना श्रेष्ठ रहता है।

गन्ध का मन्त्र

"सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासन समास्थित ।
गन्धं गृहाण देवेश चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥"

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'भस्म' समर्पित करें—

भस्म का मन्त्र

"ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥"

'भस्म' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'अक्षत' (चावल) समर्पित करें—

अक्षत का मन्त्र

"अक्षतांश्च सुरश्रेष्ठ शुभ्राधूनाश्च निर्मलाः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥"

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्प' समर्पित करें। शिव-पूजन में धतूरा, कनेर के पुष्प तथा आक के पुष्प अवश्य चढ़ाने चाहिएं।

पुष्प का मन्त्र

"माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाऽहृतानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥"

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'बिल्व पत्र' समर्पित करें—

बिल्वपत्र का मन्त्र

"बिल्वपत्रं सुवर्णेन त्रिशूलाकारमेव च ।
मयार्पितं महादेव बिल्वपत्रं गृहाण मे ।।
त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम् ।
त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ।।"

'बिल्वपत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'धूप' समर्पित करें-

धूप का मन्त्र

"वनस्पतिरसोत्पन्नो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।"

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'दीपक' प्रदर्शित करें—

दीपक का मन्त्र

"साज्यं च वर्ति संयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ।।"

'दीपक' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नैवेद्य' समर्पित करें—

नैवेद्य का मन्त्र

"अपूपानि च पक्वानि मण्डकावटकानि च ।
पायसं सूपमन्नञ्च नैवेद्यम्प्रतिगृह्यताम् ।।"

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'आचमनीय जल' समर्पित करें—

आचमनीय जल का मन्त्र

"पानीयं शीतलं शुद्धं गाङ्गेयंमहदुत्तमम् ।
गृहाण पार्वतीनाथ तवप्रीत्या प्रकल्पितम् ।।"

'आचमनीय जल'के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'करोद्वर्त्तन' समर्पित करें—

करोद्वर्त्तन का मन्त्र

"कर्पूरादीनि द्रव्याणि सुगन्धीनि महेश्वर ।
ग्रहाण जगतन्नाथ करोद्वर्तनं हेतवे ।।"

'करोद्वर्त्तन' के पश्चात् अग्रलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'फल' समर्पित करें। शिव-पूजन में बिल्व-फल भी समर्पित करना चाहिए।

फल का मन्त्र

"कूष्माण्डं मातुलिङ्गञ्च नारिकेल फलानि च ।
गृहाण पार्वतीकान्त सोमशेखर शङ्कर ॥"

'फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'ताम्बूल तथा पुङ्गीफल' समर्पित करें—

ताम्बूल पुङ्गीफल का मन्त्र

"पुङ्गीफलम्महद्दव्यं नागबल्लीदलैर्युतम् ।
गृहाण देवदेवेश द्राक्षादीनि सुरेश्वरः ॥"

'ताम्बूल पुङ्गीफल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'द्रव्य' समर्पित करें—

द्रव्य समर्पण का मन्त्र

"हिण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीज समन्वितम् ।
पञ्चरत्नं मयादत्तं गृह्यतांवृषभध्वज ॥"

'द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'नीराजन' करें—

नीराजन का मन्त्र

"अग्निर्ज्योतीरविर्ज्योतिर्ज्योतिर्नारायणोविभुः ।
नीराजयामि देवेशं पञ्चदीपे सुरेश्वर ॥"

'नीराजन' के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'पुष्पाञ्जलि' समर्पित करें—

पुष्पाञ्जलि का मन्त्र

"हर विश्वाखिलाधर निराधार निराश्रय ।
पुष्पांजलिं गृहाणेश सोमेश्वर नमोऽस्तुते ।।"

'पुष्पाञ्जलि' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करत हुए 'प्रणाम' निवेदित करें—

प्रणाम का मन्त्र

"हेतवे जगतामेव संसारार्णव सेतवे ।
प्रभवे सर्व विद्यानां शम्भवे गुरवेनमः।।"

'प्रणाम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रदक्षिणा' करें—

प्रदक्षिणा का मंत्र

"यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृतानि च ।
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे ।।"

विशेष—शिवजी की आरती करते समय शंख नहीं बजाना चाहिए । घण्टा एवं डमरू का नाद तथा मुंह से 'बम-बम' का घोष करना ही उचित है । शिवजी की प्रसन्नता के लिए 'गाल बजाना' भी श्रेष्ठ माना गया है । आरती के समय लोकभाषा में रचित आरती भी गाई जा सकती है ।

श्री शिव चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजा सुवन मंगलमूल सुजान ।
श्रीशिव चालीसा रचहुं, देहु अभय वरदान ॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजापति दीनदयाला ।
सदाकरत सन्तन प्रतिपाला ॥

भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।
कानन कुन्डल नागफनी के ॥
अंग गौर सिर गंग बहाये ।
मुण्डमाल तन क्षार लगाये ॥
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहैं ।
छवि को देखि नाग मुनि मोहैं ॥
मैना मातु कि हवे दुलारी ।
वाम अंग सोहत छवि न्यारी ॥
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी ।
करत सदा शत्रुन क्षयकारी ॥
नंदि गणेश सोह तहं कैसे ।
सागर मध्य कमल हैं जैसे ॥
स्वामि कार्तिक औ गण राऊ ।
जिनकी छवि कहि जात न काऊ ॥

देवन जबहीं जाइ पुकारा ।
तबहिं दुःख प्रभु आपु निवारा ॥
कीन्ह उपद्रव तारक भारा :
सब देवन मिलि तुमहिं जुहारा ॥

तुरत षडानन आप पठायेउ ।
लव निमेष महँ मारि गिरायेउ॥

आपु जलंधर असुर सँहारा ।
सुयश तुम्हार विदित संसारा ॥
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई ।
तबहिं कृपा करि लीन्ह बचाई ॥
भागीरथ कीन्हेउ तप भारी ।
पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी ॥
दानिन महँ तुम सम कोउ नाहीं ।
सेवक अस्तुति करत सदाहीं ॥
वेद मांहि महिमा तव गाई ।
अकथ अनादि भेद नहिं पाई ॥
प्रगटी उदधि मथन महँ ज्वाला ।
जरत सुरासुर भये बिहाला ॥
कीन्ह दया तहँ करी सहाई ।
नीलकंठ तव नाम कहाई ॥
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा ।
जीती लंक विभीषण दीन्हा ॥
सहसकमल पूजा उरधारी ।
लीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी ॥

एक कमल प्रभु राखेउ गोई ।
कमलनयन पूजन चह सोई ॥
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर ।
भये प्रसन्न दीन्ह इच्छित वर ॥
जयजयजय अनन्त अविनाशी ।
करत कृपा घट घट के बासी ॥
दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं ।
भ्रमत रहहुँ मोहिं चैन न आवैं॥
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारहुँ ।
यहि अवसर मोहि आनि उबारहु ॥
लै त्रिशूल शत्रुन कहँ मारहु ।
संकट ते मोहिं आपु उबारहु ॥
मात पिता भ्राता सब होई ।
संकट में पूछत नहिं कोई ॥
स्वामि एक है आस तुम्हारी ।
आह हरहु मम संकट भारी ॥
धन निर्धन को देत सदाहीं ।
जो कोई याचहि सो फल पाहीं ॥
अस्तुति केहि विधि करहुँ तुम्हारी ।
छिमहु नाथ अब चूक हमारी ॥
होउ स्वामि संकट के नासन ।
विघ्न बिनासन मंगल कारन ॥
जोगी जती मुनी नित ध्यावहिं ।
नारद सारद सीस नवावहिं ॥
नमो नमो जय नमः शिवाये ।

सुरब्रह्मादिक पार न पाये ॥
जो यह पाठ करै मन लाई ।
ता कहँ शंकर होंहि सहाई ॥
धन इच्छा करि धन प्रति पावैं ।
यश कामना पूर्ण हुइ जावैं ॥
पुत्रहीन की इच्छा जोई ।
शिवप्रसाद तें निश्चय होई ॥
पण्डित त्रयोदशी को लावैं ।
ध्यान सहित पुनि होम करावैं ॥
त्रयोदशी व्रत करहिं हमेशा ।
ता कहं तनिक न रहै कलेशा ॥
शंकर सम्मुख पाठ सुनावैं ।
मनक्रम वचन हिं ध्यान लगावैं ॥
जन्म जन्म के पाप नसावैं ।
अन्त बास शिवपुर में पावैं ।
शरणागत प्रभु आस तुम्हारी ।
पीड़ा हरहु महेश हमारी ॥

॥ दोहा ॥

नित्य नेम उठि प्रात ही पाठ करैं चालीस ।
ताकी सब मनकामना पूर्ण करैं गौरीश ॥
शिवचालीसा यह सुखद, चारि पदारथ देय ।
पाठ करै सोमव तरै, जग यश पावन लेय ॥

॥ इति श्री शिव चालीसा सम्पूर्णम् ॥

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥१॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजै ॥२॥
ॐ हर हर०

दो भुज चारु चतुर्भुज अति सोहै।
तीनों रूप निखरते त्रिभुवन-जन मोहै ॥३॥
ॐ हर हर०

अक्षमाला बनमाला रुंडमाला धारी।
चंदन मृग मदलेपन भाले शुभकारी ॥४॥
ॐ हर हर०

पार्वती पर्वत में बसती शिवजी कैलाशा।
आक धतूरा का भोजन भंग में बासी हैं ॥५॥
ॐ हर हर०

शिवजी के हाथों में कंगन कानों में कुण्डल।
गल मोतियन माला, जटा मृदंग विराजे
ओढ़े शीश मृग छाला।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे ॥६॥
ॐ हर हर०

कर मध्ये कमण्डलु-चक्रत्रिशूल-धारी।
जगकर्ता जगभर्ता जग-पालनकारी ॥७॥
ॐ हर हर०

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ध्यावत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों ही एका ॥८॥
ॐ हर हर०

काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दा ब्रह्मचारी
नित उठ भोग लगावत महिमा अति भारी ॥९॥
ॐ हर हर०

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित फल पावै ॥१०॥
ॐ हर हर०



आरती

आरती परम साम्ब-शंकर की।
सत्य सनातन शिव शुभकरकी ॥
आदि, अनादि, अनन्त, अनामय।
अज, अविनाशी, अकल, कलामय।
सर्वरहित नित सर्व-उरालय।
मस्तक सुरसरिधर शशिधरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी।

कर्ता, भर्ता जगसंहारी।
ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र तनुधारी।
सर्वविकाररूप अविकारी।
अग-जग-पालक प्रलयंकरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी ।।

विश्वातीत विश्वगत स्वामी।
द्रष्टा साक्षी अन्तर्यामी।
काम-काल सब-जग-हित-कामी।
अनघ-स्वरूप सकल अघहरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी ।।

मुनि-मन-हरण मधुर शुचि सुंदर।
अति कमनीय रूप सुषमावर।
दिव्याम्बर रत्नाभूषणधर।
सर्व-नयन-मन-हर सुखकरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी।

विकट कराल पंचमुखधारी।
मुण्डमाल विषधर भयकारी।
हाथ कपाल श्मशान-विहारी।
वेष असंगल मंगलकरकी।
आरति परम साम्ब-शंकर की।

भोगी, योगी ध्यानी ज्ञानी।
जग-अभिमानाधार अमानी।
आशुतोष अति औढरदानी ।।
दैन्य-दुरित-दुर्गतिहर हरकी।
आरति परम साम्ब-शंकरकी ।।

अजर अमर अज अरूप, सत चित्त आनदरूप
व्यापक ब्रह्मस्वरूप भव ! भव-भय-हारी ।।
शोभित विधुबाल भाल सुरसरिमय जटाजाल
तीन नयन अति विशाल मदन-दहन-कारी ।।
भक्त हेतु धरत शूल करत कठिन शूल फूल
हियकी सब हरत हूल अचल शान्तिकारी ।।
अमल अरुण चरणकमल सफल करत काम सकल,
भक्ति-मुक्ति देत विमल. माया-भ्रम-टारी ।।
कार्तिकेययुत गणेश हिमतनया सह महेश,
राजत कैलास-देश अकल कला-धारी ।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनंदराशि ।।२।।
अविकारी अघहारी. अकल कलाधारी ।
कर्ता विधि भर्ता हरि, हर संहारकारी ।।३।।

आरती शिवजी की

दर्शन देवी सदा शिव शम्भू
भक्त वत्सल तेरा नाम हवे।
मस्तक तेरे चन्द्र विराजे
शीश मध्य से गंग बहे ॥ टेर ॥
नाथ हाथ लिये डमरू बाजै
भुजंग हृदय पर साज हवे।
तीन कोटि सवा लक्ष
हजारों गण तेरे सम्मुख नाच हवे ॥ १ ॥
हाथ त्रिशूल लियो भोले
शम्भू वामांग गौरी राज हवे।
भस्म रमावत अंग तू सारे
गले मुण्ड माल साज हवे ॥ २ ॥
कोउ त्रिबंके कोउ अंग लम्बे
काहू के वसन डबार हवे।
काहु के केश बने अति पीले
रक्त रंग कोउ काले हवे ॥ ३ ॥
आसन तेरो कैलाश विराजत
लहरी गंगा गाज हवे।
भांग धतूरा सदा रहे खाता
तव बाघम्बर साव हवे ॥ ४ ॥
नारद इन्द्र देव सब दानव
आरति तेरी गाज हवे।
ऐसे हि मानुष गाये सुने जे
मन वांछित फल पाव हव ॥ ५ ॥
रूप कहे कर जोरि सदा शिव
मेरो मनोरथ कीजे हवे।

गुरु चरणों में प्रीति रहे नित
बचन सफल मेरो कीजे हवे ॥ ६ ॥

शिवजी की आरती

जय गौरीशंकर, ॐ जय गौरीशंकर,
जय जय जय जय जय जय जय भोले शंकर ।
जगकारण, जगपालक, हो विनाश कर्ता,
निज जन के रखवारे जय गौरीशंकर ।
आशुतोष हो भगवन्! और उदार दाता,
तनिक मात्र पूजा से हो प्रसन्न शंकर ।
हो निरीह अविकारी, भुक्ति-मुक्ति दाता,
तुम समान नहिं दानी और दुख से त्राता ।
अग्रगण्य ज्ञानी तुम राम-भक्ति-दाता,
मेरे सब कुछ तुम्हीं गुरु-पितु और माता ।
हो समर्थ हे स्वामी, महादेव नामा,
जो जन शरणे आयो, पूरे सब कामा ।
गंगाधर योगेश्वर जय जय त्रिपुरारी,
अघहारी कामारी, भक्तन दुखहारी ।
सुर-गुरु परम दयालो, काशी के वासी,
काम-क्रोध-भव-नाशी जय जय अविनाशी ।

महिमा अपरम्पारा, पार नहीं पाऊं,
गिरा-ज्ञान-गोतीता कैसे गुण गाऊं ।
बैजनाथ, रामेश्वर, हे कैलाशपति,
प्रणवाक्षर में शोभित देते तुम सुगति ।
अघनाशी, अविनाशी, पाप हरो देवा,
राम-भक्ति मोहि दीजे, और अपनी सेवा ।
तीनों ताप मिटाओ, हे त्रिशुलधारी,
निर्मल ज्ञान सिखाओ, जय जय अघहारी

मैं आलसी, प्रमादी, कछु नहिं बनिआवें,
दया करो हे भगवन, बाधा मिट जावे।
भव के फंद छुड़ाओ, त्राहि त्राहि शंकर,
यम-यातना न पाऊं, जय जय जय शंकर।

भगवान् भोलेनाथ जी

अभयदान दीजै दयालु प्रभु सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ भक्त-दुखगंजन भवभंजन शुभ सुखकारी।।
दीनदयालु कृपालु कालरिपु अलखनिरंजन शिव योगी।
मंगल रूप अनूप छबीले अखिल भुवन के तुम भोगी।।
बाम अंग अति रंगरस-भीने उमा-वदन की छवि न्यारी।
भोलेनाथ० ।।

असुर निकन्दन सब दुख भंजन वेद बखाने जग जाने।
रुंडमाल गल-व्याल भाल-शशि नीलकंठ शोभा साने।।
गंगाधर त्रिशूलधर विषधर बाघम्बरधर गिरिचारी।।
भोलेनाथ० ।।

यह भवसागर अति अगाध है पार उतर कैसे बूझै।
ग्राह मगर बहु कच्छप छाये मार्ग कहो कैसे सूझै।।
नाम तुम्हारा नौका निर्मल तुम केवट शिव अधिकारी।।
भोलेनाथ० ।।

मैं जानूं तुम सद्गुणसागर अवगुण मेरे सब हरियो!
किंकर की विनती सुन स्वामी सब अपराध क्षमा करियो।
तुम तो सकल विश्व के स्वामी मैं हूं प्राणी संसारा।।
भोलेनाथ० ।।

काम-क्रोध-लोभ अति दारुण इनसे मेरो वश नाहीं।
द्रोह-मोह-मद संग न छोड़ै आन देत नहि तोहि।।
क्षुधा-तृषा नित लगी रहत है बढ़ी विषय तृष्णा भारी।
भोलेनाथ० ।।

तुम ही शिवजी कर्त्ता-हर्त्ता तुम ही जग के रखवारे।
तुम ही गगन मगन पुनि पृथवी पर्वत-पुत्री के प्यारे॥
तुमही पवन हुताशन शिवजी तुमही रवि शशि तमहारी।
भोलेनाथ०॥

पशुपति अजर अमर अमरेश्वर योगेश्वर शिव गोस्वामी।
वृषभारूढ़ गूढ़ गुरु गिरिपति गिरिजावल्लभ निष्कामी॥
सुषमासागर रूप उजागर गावत हैं सब नरनारी॥
भोलेनाथ०॥

महादेव देवों के अधिपति फणिपति-भूषण अति साजै।
दीप्त ललाट लाल दोउ लोचन उर आनत ही दुख भाजै॥
परम प्रसिद्ध पुनीत पुरातन महिमा त्रिभुवन-विस्तारी॥
भोलेनाथ०॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश-शेष-मुनि-नारद आदि करत सेवा।
सब की इच्छा पूरन करते नाथ सनातन हर देवा॥
भक्ति-मुक्ति के दाता शंकर नित्य निरन्तर सुखकारी॥
भोलेनाथ०॥

महिमा इष्ट महेश्वर की जो सीखे सुने नित्य गावे।
अष्टसिद्धि नवनिधि सुखसम्पति स्वामिभक्ति मुक्ति पावे।
श्री अहिभूषण प्रसन्न होकर कृपा कीजिये त्रिपुरारी॥
भोलेनाथ०॥

श्रीशिवाष्टक

आदि अनादि अनंत अखंड अभेद अखेद सुवेद बतावैं।
अलख अगोचर रूप महेस कौं जोगि जती-मुनि ध्यान न पावैं।
आगम-निगम-पुरान सबै इतिहास सदा जिनके गुन गावैं।
बड़भागी नर-नारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं॥
सृजन-सुपालन-लय-लीलाहित जो विधि-हरि-हररूप बनावैं।
एकहि आप विचित्र अनेक सुवेष बनाइकै लीला रचावैं॥

सुन्दर सृष्टि सुपालन करि जग पुनि बन काल जु खाय पचावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब-सदाशिव कौं नित ध्यावैं।।
अगुन अनीह अनामय अज अविकार सहज निज रूप धरावैं।
परम सुरम्य बसन-आभूषन सजि सुनि-मोहन रूप करावैं।।
ललित ललाट बाल बिधु विलसै रतन-हार उर पै लहरावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं।।
अंग विभूति रमाय मसान की विषमय भुजगनि कौं लपटावैं।
नर-कपाल कर, मुण्डमाल गल, भालु-चरम सब अंग उढ़ावैं।।
घोर दिगंबर, लोचन तीन भयानक देखि कैं सब थर्रावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं।।
सुनतहि दीन की दीन पुकार दयानिधि आप उबारन आवं।
पहुंच तहां अविलम्ब सुदारुन मृत्यु को मर्म बिदारि भगावैं।।
मुनि मृकंडु-सुत की गाथा सुचि अजहुं, विज्ञजन गाइ सुनावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब सदासिव कौं नित ध्यावैं।
चाउर चारि जो फूल धतूरे के, बेल के पात औ पानि चढ़ावैं।
गाल वजाय कै बोल जौ 'हर हर महादेव' धुनि जोर लगावैं।।
तिनहि महाफल देयं सदासिव सहजहि भुक्ति-मुक्ति सो पावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं।।
बिनसि दोष दुख दुरित दैन्य दारिद्रयं नित्यसुख-सांतिमिलावै।
आसुतोष हर पाप-ताप सब निरमल बुद्धि-चित्त बकसावैं।।
असरन-सरन काटि भवबंधन भव निज भवन भव्य बुलवावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं।।
औढरदानी, उदार अपार जु नैकु-सी सेवा तें ढुरि जावै।
दमन अशांति, समन संकट, बिरद विचार जनहिं अपनावैं।।
ऐसे कृपालु कृपामय देव के क्यों न ~~सरन~~ अबहीं चलि जावैं।
बड़भागी नरनारि सोई जो सांब-सदासिव कौं नित ध्यावैं।।

श्री शिव चालीसा

दोहा

अज अनादि अविगत अलख, अकल अतुल अविकार।
बंदौं शिव-पद-युग-कमल अमल अतीव उदार॥ १॥
आर्तिहरण सुखकरण शुभ भक्ति-मुक्ति-दातार।
करौ अनुग्रह दीन लखि अपनो विरद विचार॥ २॥
परयो पतित भवकूप महं सहज नरक आगार।
सहज सुहृद पावन-पतित, सहजहि लेहु उबार॥ ३॥

पलक-पलक आशा भर्‌यो, रह्यो सु-बाट निहार।
ढरौ तुरंत स्वभाववश, नेकु न करौ अबार॥ ४॥

जय शिवशंकर औढरदानी।
जय गिरितनया मातु भवानी॥ १॥
सर्वोत्तम योगी योगेश्वर।
सर्वलोक-ईश्वर-परमेश्वर॥ २॥
सब उर-प्रेरक सर्वनियन्ता।
उपद्रष्टा भर्ता अनुमन्ता॥ ३॥
पराशक्ति-पति अखिल विश्वपति।
परब्रह्म परधाम परमगति॥ ४॥
सर्वातीत अनन्य सर्वगत।
निज स्वरूप महिमा में स्थितरत॥ ५॥
अंगभूति- भूषित श्मशानचर।
भुजंगभूषण चन्द्र मुकुटधर॥ ६॥
वृषवाहन नंदीगण नायक।
अखिल विश्व के भाग्य-विधायक॥ ७॥
व्याघ्रचर्म परिधान मनोहर।
रीछचर्म ओढ़े गिरिजावर॥ ८॥
कर त्रिशूल डमरूवर राजत।

अभय वरद मुद्रा शुभ लाजत ॥ ९ ॥
तनु कर्पूर-गौर उज्ज्वलतम ।
पिंगल जटाजट सिर उत्तम ॥१०॥
भाल त्रिपुण्ड मुण्डमालाधर ।
गल रुद्राक्ष-माल शोभाकर ॥११॥
विधि-हरि-रुद्र त्रिविध वपुधारी ।
बने सृजन-पालन-लयकारी ॥१२॥
तुम हो नित्य के सागर ।
आशुतोष आनन्द-उजागर ॥१३॥
अति दयालु भोले भण्डारी ।
अग-जग सबके मंगलकारी ॥१४॥
सती-पार्वती के प्राणेश्वर ।
स्कन्ध-गनेश-जनक-शिव सुखकर ॥१५॥
हरि-हर एक रूप गुणशीला ।
करत स्वामि-सेवक की लीला ॥१६॥
रहते दोउ पूजत पुजवावत ।
पूजा-पद्धति सबन्हि सिखावत ॥१७॥
मारुति बन हरि-सेवा कीन्ही ।
रामेश्वर बन सेवा लीन्ही ॥१८॥
जग-हित घोर हलाहल पीकर ।
बने सदा शिव नीलकंठ वर ॥१९॥
असुरासुर शुचि वरद शुभंकर ।
असुर निहन्ता प्रभु प्रलयंकर ॥२०॥
'नमः शिवाय' मन्त्र पञ्चाक्षर ।
जपत मिटत सब क्लेश भयंकर ॥२१॥
जो नर-नारि रटत शिव-शिव नित ।
तिनको शिव अति करत परम हित ॥२२॥
श्रीकृष्ण तप कीन्हों भारी ।

ह्वै प्रसन्न वर दियो पुरारी ॥२३॥

अर्जुन संग लड़े किरात बन।
दियो पाशुपत-अस्त्र मुदित मन ॥२४॥

भक्तन के सब कष्ट निवारे।
दे निज भक्ति सबह्नि उद्धारे ॥२५॥

शंखचूड़ जालन्धर मारे।
दैत्य असंख्य प्राण हर तारे ॥२६॥

अन्धक को गणपति पद दीन्हों।
शुक्र-शुक्रपथ बाहर कीन्हों ॥२७॥

तेहि संजीवनि विद्या दीन्हीं।
बाणासुर गणपति-गति कीन्हीं ॥२८॥

अष्टमूर्ति पंचानन चिन्मय।
द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग ज्योतिर्मय ॥२९॥

भुवन चतुर्दश व्यापक रूपा।
अकथ अचिन्त्य असीम अनूपा ॥३०॥

काशी मरत जंतु अवलोकी।
देत मुक्ति-पद करत अशोकी ॥३१॥

भक्त भगीरथ की रुचि राखी।
जटा बसी गगा सुर साखी ॥३२॥

रुरु अगस्त्य उपमन्यू ज्ञानी।
ऋषि दधीचि आदिक विज्ञानी ॥३३॥

शिवरहस्य शिवज्ञान प्रचारक।
शिवहिं परम प्रिय लोकोद्धारक ॥३४॥

इनके शुभ सुमिरन तें शंकर।
देत मुदित ह्वै अति दुर्लभ वर ॥३५॥

अति उदार करुणा वरुणालय।
हरण दैन्य-दारिद्र्य-दुःख-भय ॥३६॥

तुम्हरो भजन परम हितकारी।
विप्र शूद्र सब ही अधिकारी ।।३७।।
बालक वृद्ध नारि-नर ध्यावहिं।
ते अलभ्य शिवपद को पावहिं ।।३८।।
भेदशून्य तुम सब के स्वामी।
सहज सुहृद सेवक अनुगामी ।।३९।।
जो जन शरण तुम्हारी आवत।
सकल दुरित तत्काल नशावत ।।४०।।

दोहा

वहन करौ तुम शीलवश, निज जनको सब भार।
गनौ न अघ, अघ-जातिकछु राब विधि करौ संभार ।।१।।
तुम्हरो शील स्वभाव लखि, जो न शरक्ष तव होय।
तेहि सम कुटिल कुबुद्धिजन, नहिं कुभाग्य जन कोय ।।२।।
दीन हीन अति मलिन मति, मैं अघ-ओघ अपार।
कृपा-अनल प्रगटौ तुरत, करौ पाप सब छार ।।३।।
कृपा-सुधा बरसाय पुनि, शीतल करौ पवित्र।
राखौ पदकमलनि सदा, हे कुपात्र के मित्र! ।।४।।

—०—

श्री शिवसाठिका

।। चौपाई ।।

जय जय जय शंकर जग वन्दन।
अस्तुति करत शेष श्रुति छन्दन ।।

जय कैलाश पति सुर स्वामी।
कर सम्पुट शत बार नमामी॥
कुन्द कपूर गौर सुन्दर तन।
चिता भस्म लेपत प्रसन्न मन॥
पिंगल जटा जूट मन लोभित।
कोटिन तड़ित कांति समशोभित॥
करत कलोल जटन विच गंगा।
कटत पाप लखि शुभ्र तरंगा॥
दिपत ललाट बाल रजनीशा।
देख त्रिपुंड जाहिं अघ खीशा॥
शुचि कपोल अहि कुण्डल काना।
मुख छबि शतशशि शरद समाना॥
बिकट भ्रकुटि चबि कहि नहिं जाई।
कोटि काम-धनु देख लजाई॥
अरुन कमल सम जन दुख मोचन।
रविशशि अग्नि सुत व त्रल लोचन॥
शुक निंदक नासा सुहावनी।
अधर भलक विद्रूम लजावनी॥
कुन्द कलि सम दशनन पांती।
हीरा ज्योति थकी सब भांति॥
प्रिय बोलन मृदु हास सुहावन।
सुधा भरत जनु भक्त जियावन॥
चिबुक गाढ़ उपमा अस आई।
बैठि महा छबि विवर बनाई॥
नील कंठ महिमा मति मोरी।
वरणि सकय नहिं कल्प करोरी॥

जा विष ज्वाल जरत जग तीतल।
भा तेहि कंठ सुधा सम शीतल॥
वृषभ कंध पन्नग उपवीतम्।
उर आयत सब भांति पुनीतम्॥
सोह अक्ष बन मुंडन माला।
भूषण भांति सजे उर व्याला॥
नाग सुंड भुज जन सुभाग के।
कलित कड़े कय्र नाग के॥
अरुण जलज सम पाणि सुहाये।
युत त्रिशूल डमरू छवि छाये॥
त्रिवली उदर नाभि सुघड़ाई।
जनु सुरसरि भंवर गहराई॥
कटि तट फवत सुअहि लंगोटा।
ललित सुडौल जघ की जोटा॥
तरुण तामरस चरण ललाई।
जावक जपा कुसुम सकचाई॥
वट तरु दिव्य नाग रिपु छाला।
शोभित पद्मासन शशि भाला॥
राजत बाम भाग जगदम्बा।
जाकी कृपा सृष्टि अवलम्बा॥
चारण सिद्ध यक्ष मुनि किन्नर।
पूजत पद सरोज मंगल कर॥
कोटिन गण चरणन रखवारे।
नंदी वीरभद्र बल भारे॥
जय शिव देव देव जग धाता।
षट मुख गणपति हनुमत ताता॥

जय वैराग्य सरोज दिवाकर।
जय अनवद्य अजित जोगेश्वर।।
तव माया सब सृष्टि पसारा।
उत्पति थित लय भृकुटि अधारा।।
तव आज्ञा फणीश धर धरणी।
शशि रस श्रवत तपत हैं तरणी।।
पवन वरुण धनेश सुरराजा।
तव आयसु लगि निज-निज काजा।।
देवन दुख जब दुष्टन देयऊ
हरेउ असुर सुर रक्षक भयेऊ।
अन्धक दैत्य तुम्हन संहारा।
एकहि बाण त्रिपुर हनिडारा।।
मारेउ जलन्धर संग्रामा।
दहेउ ललाट नैन सों कामा।।
दक्ष विचारेउ तव अपमाना
यज्ञ विध्वंस कीन्ह जगजाना।
अति बलवान गजासुर योधा।
तुम्हरे कोप मृत्यु मुख शोधा।।
जब कृतान्तकर प्रलय प्रकाशा।
होइय तुरत सृष्टि कर नाशा।।
उग्ररूप होइ कोप सुतक्षण।
तुमहीं करहु काल कर भक्षण।।
शूल नोंक दिग दिग्गज छेदी।
नृत्यत महा प्रलय निरभेदी।।
अति विचित्र विभु कौतक तोरे।
तुम सम अगम न तुम सम भोरे।।

ओढ़े तन गज चर्म पुरारी।
काशी वीथिन बीच बिहारी।।
एक बार तव लिंग शरीरा।
ढूंढन गयेउ विष्णु विधि धीरा।।
अतल रसातल वितल तलातल।
सोधेउ सुतल पाताल महातल।।
भू भुव स्व महजन तप सत्यं।
लखि सर्वत्र रुद्र अधिपत्यं।।
शम्भु लिंग तिन पार न पावा।
थके विष्णु विधि पद सिर नवाया।।
राम तुम्हें जब पूजि निहोरा।
दीन्ह अशीष लङ्क गढ़ तोरा।।
कागभुसुण्डि जपेउ धरि ध्याना।
पायेउ अमर तत्व दृढ़ ज्ञाना।।
द्वापर भारत युद्ध भयउ जब।
कृष्ण पार्थ कैलाश गयउ तब।।
अर्जुन पद प्रणाम तब कीन्हा।
दिव्य सुअस्त्र विजय कहि दीन्हा।।
विष्णु एक दिन सहस कमल सों।
पूजेउ तुम अति प्रेम अमल सों।।
तव कौतुक एक पदम् छिपाएउ।
घट्यौ जानि हरि नयन चढ़ाएउ।।
देख प्रेम मिलि हर्रांह भुजन गहि।
अजय चक्र दियो कमल नयन कहि।।
तुमहि भजेउ भागीरथ राजा।
राखी गंग कीन्ह तेहि काजा।।

तुम जप नृप पद पावें रंकू ।
मेटहु द्विज कुल कठिन कलंकू ।।
नर तन धरि तव भजन न कीन्हा ।
वृथा जन्म जननिहि दुख दीन्हा ।।
शोक रोग भय कुग्रह कुयंत्रू ।
व्याधि नसाहिं जपत शिवमंत्र ।।
गाव जो अस्तुति आरति हरकी ।
पाव सुपुत्र भक्ति शंकर की ।।
परिय न कबहुं अगम भवकूपहिं ।
मिलिय अंतशुचि शम्भु स्वरूपहिं ।।
जो शिव प्रिय पाठक सुपाठिका ।
लहैं परम सुख पढ़त साटिका ।।
संत सुजन पद शीश नवाऊं ।
क्षमहु चूक शंकर बलिजाऊं ।।

दोहा—उमानाथ, जगनाथ ममनाथ सुभोलानाथ ।
'शान्त' चहै करकमल की, छांह सदा निज माथ ।।



झांकी उमा महेश की, आठों पहर किया करूं ।।
नैनों के पात्र में सुधा भर भर के मैं पिया करूं ।
वाराणसी का वास हो, और न कोई पास हो ।।
गिरजापति के नामका सुमरन भजन किया करूं ।
जयति जय महेश हे ! जयति नन्दिकेश हे !

जयति जय उमेश हे, प्रेम से मैं जपा करूं ।
इच्छा कहीं अमित न हो, सेवा का भार मुझको दो ।।
जी भरके तुम पिया करो, घोट के मैं दिया करूं ।
जी में तुम्हारी है लगन खींचते हैं उधर व्यसन ।।
हरदम चलायमान मन, इसका उपाय क्या करूं ।
भिक्षा में नाथ दीजिये, अपनी शरण में लीजिये ।।
ऐसा प्रबन्ध कीजिये, सेवा में मैं रहा करूं ।
भक्ती सुधा का प्रेम से प्याला सदा पिया करूं ।।
झिझरी नवैया मेरी जब मंझधार में ही आपड़ी ।
पतवार लेना हाथ में बेकल मैं जब हुआ करूं ।।
झगड़े जगत के छोड़कर तेरी शरण में आऊं मैं ।
भगवत भजन में मैं सदा अलमस्त ही रहा करूं ।।

शिवशंकर भोले भाले तुमको लाखों प्रणाम।
कैलाश बसाने वाले तुमको लाखों प्रणाम।।
जूट जटा शिर ऊपर साजे, डमरू डम् डम् डमरू बाजे।
चन्द्रकला मस्तक पर राजे, वाम विभागे शिवा विराजे।।
गल भुजंग हैं काले तुमको लाखों प्रणाम।। शिव०।।
शीश पै सोहे गंगा की धारा, महिमा तुम्हरी अगम अपारा।
जय महेश जय भव भय हारा, जय करुणासागर करतारा।।
भस्म रमाने वाले तुमको लाखों प्रणाम।। शिव०।।
रुद्र माल गले भुजंग माला, कर त्रिशूल सोहे करताला।
जयदेव जय जयति कृपाला, नीलकंठे कटि में मृगछाला।।
कानन कुण्डल डाले तुमको लाखों प्रणाम।। शिव०।।

वृषभ बाहन अंग विभूति, देवन के देवन निर्गुण रूपा।
निगम अगम शान्तिमय सरूपा, त्रयलोचन त्रिपुरारी अनूपा।।
कष्ट मिटाने वाले तुमको लाखों प्रणाम।। शिव०।।
शिवनाथ जय जय शिवशंकर, केदारनाथ करुणा के सागर।
बम बम भोले जय हर हर निराकार करुणा के सागर।।
भक्तों को अपना ले तुमको लाखों प्रणाम।। शिव०।।

सदा शिव सर्व वरदाता दिगम्बर हो तो ऐसा हो।
हरे सब दुःख भक्तन के दयाकर हो तो ऐसा हो॥
शिखर कैलाश के ऊपर कल्पतरुओं की छाया में।
रमे नित संग गिरजा के रमणधर हो तो ऐसा हो॥
शीश पर गंग की धारा, सुहावे भाल में लोचन।
कला मस्तक में चन्दन की, मनोहर हो तो ऐसा हो॥
भयंकर जहर जब निकला क्षीर सागर के मथने से।
धरा सब कंठ में पीकर जो विषधर हो तो ऐसा हो॥
सिरों को काटकर अपने किया जब होम रावण ने।
दिया सब राज्य दुनियां का दिलावर हो तो ऐसा हो॥
किया नन्दी ने जा बन में कठिन तप काल के डर से।
बनाया खास गण अपना अमरकर हो तो ऐसा हो॥
बनाये बीच सागर में तीन पुर दैत्य सेना ले।
उड़ाये एक ही शर में त्रिपुर हर हो तो ऐसा हो॥
पिता के यज्ञ में जाकर तजि जब देह गिरिजा ने।
किया सब ध्वंस पलभर में भयंकर हो तो ऐसा हो॥
देव नर दैत्यगण सारे जपें नित नाम शंकर का।
वो ब्रह्मानन्द दुनिया में उजागर हो तो ऐसा हो॥

— o —

भगवान कैलाशवासी

शीश गंगा अर्धंग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं धरत ध्यान सुर सुखरासी॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर राग रागिनी मधुरासी॥
यक्ष रक्ष भैरव जहं डोलत बोलत हैं वन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर भ्रमर करत हैं गुञ्जासी॥
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिन जहं डोलत करत दुग्ध की वर्षासी॥
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित, चन्द्रकान्त सम हिमराशी।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित सेवत सदा प्रकृति-दासी॥
ऋषि-मुनि देव दनुज नित सेवत, गान-करत श्रुति गुणराशी।
ब्रह्मा-विष्णु निहारत निसिदिन कछु शिव हमकूं फरमासी॥
ऋद्धि के दाता शंकर नित सत् चित् आनन्दराशी।
जिनके सुमरित ही कट जाती कठिन काल-यम की फांसी॥
त्रिशूलधरजी का नाम निरन्तर प्रेम सहित जो नर गासी।
दूर होय विपदा उस नरकी जन्म-जन्म शिवपद पासी॥
कैलाशी काशी के वासी अविनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरनन को अपनो जान कृपा कीजो॥
तुम तो प्रभुजी सदा दयामय अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर किंकर की विनती सुनियो॥

(१)

श्री शिवप्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं
गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ १ ॥
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्द्ध देहं
सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम् ।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ २ ॥
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं
वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।
नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ ३ ॥
प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य
श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति ।
ते दुःखजातं बहुजन्मसञ्चितं
हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीशिवस्य प्रातःस्मरणम् ॥

(२)

शिवप्रातः स्मरण स्तोत्रम्

प्रातःस्मरामि गिरिजापतिमादितेय—
स्रोतस्विनीत्रमभिरामजटाकलापम् ।
पीयूषभानुमुकुटं शिखिपुष्पवन्ता—
क्षं नीलकण्ठमनुपाधिकृपामृताब्धिम् ।। १ ।।
प्रातर्नमामि निखिलेश्वरशासितारं—
तारं समस्तनिगमेषु कृतप्रचारम् ।
कामं दहन्तमहिमन्तमनन्तमन्तः—
सन्तं सुतीकुलललामकलत्रवन्तम् ।। २ ।।
प्रातर्भजामि निखिलौषधिभर्तृभूषा—
रत्नं क्रियासु कुशलं भवरोगभीतः ।
पीयूषपाणिमगदप्रदमागमस्वं
वर्षिष्ठमार्त्तकरुणापरवन्तमीशम् ।। ३ ।।
श्लोकत्रयं विरचितं स्वामिना प्रबोधा—
नन्देन नन्दयतु शश्वदिदं प्रसन्नम् ।
धन्यानखण्डविभवानमृतांशुखण्ड—
चूड़ामणिस्मरणलोलुपचित्तचुञ्चून् ।। ४ ।।

(३)

श्रीसदाशिव ध्यानम

आद्यन्तमङ्गलमजातसमानभाव—
मार्यं तमीशमजरामरमात्मदेवम् ।
पञ्चाननं प्रबलपञ्चविनोदशीलं
सम्भावये मनसि शंकरमम्बिकेशम् ।।

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ।
शूलं वज्रं खड्गं त्र परशुमपिवरं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।।
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितं चांकुशंवामभागे ।
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं भजामि।।

वंदे देवमुमापति सुरगुरुं वंदे जगत्कारणम्
वंदे पन्नगभूषणं मृगधरं वंदे पशूनां पतिम् ।
वंदे सूर्यशशांकवह्नि-नयनं वंदे मुकुन्दप्रियम्,
वंदे भक्तजनाश्रयं च वरदं वंदे शिवं शंकरम् ।।

ॐ शान्तकारं शिखरशयनं सर्पहारं सुरेशं ।
विश्वाधारं स्फटिकसदृशं शुभ्रवर्णं शुभांगम् ।।
गौरीकांत मदनदहनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

कर्पूरगौरं करुणावतरं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।।

॥ शिवमानस पूजा ॥

रत्नैःकल्पितमासनं हिमजलैःस्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदा मोदाङ्कितं चन्दनम् ॥
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देवं ! दयानिधे ! पशुपते ! हृत्कल्पितं
गृह्यताम् ॥ १ ॥

सौवर्णे मणिखण्डरत्नरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम् ॥
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखन्डोज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥ २ ॥

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चारदर्शकं निर्मलं
वीणा भेरि मृदङ्ग काहल कला गीतं च नृत्यं तथा
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधे चैतत्समस्तं मया ॥
संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ! ॥ ३ ॥

आत्मा त्वं गिरजापतिः सहचराः प्राणाः शरीरं
गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिण विधि स्तोत्राणि सर्वागिरा
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ॥
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ॥ ५ ॥

इति श्री शिवमानसपूजा सम्पूर्णम् ।

श्री महामृत्युञ्जयकवचम्

श्रीदेव्युवाच

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सृष्टिस्थितिलयात्मक।
मृत्युंजयस्य देवस्य कवचं मे प्रकाशय ॥

श्रीईश्वर उवाच

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
मार्कण्डेयोऽपि यद्धृत्वा चिरजीवी व्यजायत ॥

तथैव सर्वदिक्पाला अमरावमवाप्नुयुः।
कवचस्य ऋषिर्ब्रह्मा छन्दोऽनुष्टुबुदाहृतन् ॥
मृत्युंजयः समुद्दिष्टो देवता पार्वतीपतिः।
देहारोग्यबलायुष्ट्वे विनियोगः प्रकीर्तितः॥
ओं त्र्यम्बकं मे शिरः पातु ललाटं मे यजामहे।
सुगन्धि पातु हृदयं जठरं पुष्टिवर्धनम् ॥
नाभिमुर्वारुकमिव पातु मां पार्वतीपतिः।
बन्धनादूरुयुग्मं मे पातु कामाङ्गशासनः॥
मृत्योर्जानुयुगं पातु दक्षयज्ञविनाशनः।
जंघायुग्मं च मुक्षीय पातु मां चन्द्रशेखरः॥
मामृताच्च पदद्वन्द्वं पातु सर्वेश्वरो हरः।
अंसौ मे श्रीशिवः पातु नीलकण्ठश्च पार्श्वयोः॥
ऊर्ध्वमेव सदा पातु सोमसूर्याग्निलोचनः।
अधः पातु सदा शम्भुः सर्वापद्विनिवारणः॥
वारुण्यामर्धनारीशो वायव्यां पातु शंकरः।
कपर्दी पातु कौबेर्यामैशान्यां ईश्वरोऽवतु ॥

ईशानः सलिले पायद्घोरः पातु कानने ।
अन्तरिक्षे वामदेवः पायात्तत्पुरुषो भुवि ।।
श्रीकण्ठः शयने पातु भोजने नीललोहितः ।
गमने त्र्यम्बकः पातु सर्वकार्येषु सुव्रतः ।।
सर्वत्र सर्वदेहं मे सदा मृत्युंजयोऽवतु ।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं सर्वकामदम् ।।
सर्वरक्षाकरं सर्वग्रहपीड़ानिवारणम् ।
दुःस्वप्ननाशनं पुण्यमायुरारोग्यदायकम् ।।
त्रिसंध्यं यः पठेदेतन्मृत्युस्तस्य न विद्यते ।
लिखितं भूर्जपत्रे तु य इदं मे व्यधारयेत् ।।

तं दृष्टैव पलायन्ते भूतप्रेतपिशाचकाः ।
डाकिन्यश्चैव योगिन्यः सिद्धगन्धर्वराक्षसाः ।।
बालग्रहादिदोषा हि नश्यन्ति तस्य दर्शनात् ।
उपग्रहाश्चैव मारीभयं चौराभिचारिणः ।।
इदं कवचमायुष्यं कथितं तव सुन्दरि ।
न दातव्यं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कदाचन ।।

(इति महामृत्युञ्जयकल्पे देवीश्वरसंवादे महामृत्युञ्जयकवचं समाप्तम्)

श्रीअमोघशिवकवचम्

अमोघ शिवकवच

यह अमोघ शिवकवच परम गुह्य, आदरणीय, सब पापों को दूर करने वाला, विघ्न-बाधाओं को हरने वाला, परम पवित्र और सम्पूर्ण विपत्तियों का नाशक माना गया है। यह परम हितकारी है और सब भयों को दूर करता है।

पहले विनियोग छोड़कर ऋष्यादिन्यास, करन्यास और हृदयादि-अंगन्यास करके भगवान् शंकर का ध्यान करे। तदनन्तर कवच का पाठ करे।

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीसदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम्, श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम, सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे।
श्रीसदाशिवरुद्रदेवतायै नमः हृदि।
ह्रीं-शक्तये नमः पादयोः।
वं-कीलकाय नमः नाभौ।
श्रीं ह्रीं क्लीं इति बीजाय नमः गुह्ये।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां वषट् ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां हुम् ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

हृदयाद्यङ्गन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रां रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट् ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिं रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम् ।

ॐ नमो भगवते ज्वंज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम् ।
सहस्रकरत्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम् ।।

ऋषभ उवाच

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम् ।
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते।।

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम् ।
वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम ।। १ ।।

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः ।
जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम् ।। २ ।।

हृत्पुण्डरीकान्तरसंनिविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभो
ऽवकाशम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम् ।। ३।।

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्न-
चेताः ।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात्कवचेन रक्षाम् ।।४।।

माँ पातु देवोऽखिलदेवात्मा संसारकूपे पतितं गंभीरे ।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ।।५।।

सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात् ।।६।।

यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात्स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥७॥

कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥८॥

प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रःप्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम् ॥९॥

कुठारवेदाङ्कुशपाशशूलकपालढक्काक्षगुणान् दधानः।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥१०॥

कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयांकः।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥११॥

वराक्षमालाभयटंकहस्तः सरोजकिञ्जल्कसमानवर्णः।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥१२॥

वेदाभयेष्टांकुशटंकपाशकपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।
सितद्युतिः पञ्चमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥१३॥

मूर्द्धानमव्यान्मम चंद्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥१४॥

पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात् सततं
कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पञ्चवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेद-
जिह्वः ॥१५॥
कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाक-
पाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तको-
ऽव्यात् ॥१६॥
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्त-
कारी ।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात्कटी धूर्जटि-
रीश्वरो मे ॥१७॥
ऊरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरो-
ऽव्यात् ।
जङ्घायुगं पुङ्गवकेतुरव्यात् पादौ ममाव्यात्सुरवन्द्यपादः॥१८॥
महेश्वरः पातु दिनादियामे मां मध्यमामेऽवतु वामदेवः ।
त्रियम्बकः पातु तृतीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे ॥१९॥
पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गंगाधरो रक्षतु मां
निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युंजयो रक्षतु सर्वकालम् ॥२०॥
अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां स्थाणुः सदा पातु
बहिस्थितं माम् ।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां
समन्तात् ॥२१॥

तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधि-
नाथः ।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः
शयानम् ॥२२॥

मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः ।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः ॥२३॥

कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः ।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥२४॥

पत्त्यश्वमातंगघटावरूथसहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठार-
धारया ॥२५॥

निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चिर्ज्वलत्त्रिशूलं त्रिपुरान्त-
कस्य ।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान् संत्रासयत्वीशधनुः
पिनाकम् ॥२६॥

दुःस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्यदुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सह-
दुर्यशांसि ।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे
जगतामधीशः ॥२७॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्त्वात्मकाय सकलतत्त्व विहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकलोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्त्तिभञ्जनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैकशंकराय शशाङ्कशेखराय शाश्वतनिजभासाय निर्गुणाय निरुपमाय निरूपाय निराभासाय निरामयाय

निष्प्रपञ्चाय निष्कलंकाय निर्द्वन्द्वाय निस्सङ्गाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरवकल्पान्तभैरव कपालमालाधर खट्वांगखड्गचर्मपाशांकुशडमरुशूलचापबाण गदाशक्ति भिन्दिपालतोमरमुसलमुग्दर पट्टिशपरशुपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्डमण्डल नागेन्द्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युंजय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं माराय माराय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वांगेन विपोथय विपोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसान् संत्रासय संत्रासय ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धराय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्याययाप्यापय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकवचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया ।
सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्व देहिनाम् ॥ २८ ॥

यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवं कवचमुत्तमम् ।
न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात् ॥ २९ ॥

क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा ।
सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्चविन्दति ॥ ३० ॥

सर्वदारिद्र्यशमनं सौमङ्गल्यविवर्धनम् ।
यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥ ३१ ॥

महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः ।
देहान्ते शिवमाप्नोति शिववर्मानुभावतः ॥ ३२ ॥

त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम् ।
धारयस्व मया दत्तं सद्यः श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥

इति श्रीस्कान्दे पुराणे एकाशीतिसाहस्रां तृतीये ब्रह्मोत्तरखण्डे सीमन्तिनीमाहात्म्ये भद्रायुषोपाख्याने शिवकवचकथनं नाम द्वादशः ॥१२॥

श्रीशरभेश्वर (शिव) कवचम्

श्रीपार्वत्युवाच

देव देव महेशान परमात्मन् जगद्गुरो।
रहस्यं शालुवेशस्य कवचाख्यं वद प्रभो ॥ १ ॥

र्षिचछन्दस्त्वधिष्ठातृदेवता कीलकं त्वनु।
विनियोगो नियोक्तृणां सर्वदा त्विह तावकम् ॥ २ ॥

श्रोतुमिच्छामि तत् त्वत्तः कोऽन्यो वक्तुं क्षमस्त्विह।
शालुवेशः पक्षिराजो ह्यानुध्येय प्रसाधकै ॥ ३ ॥
वक्ष्यामि शृणु देवेशि सर्वरक्षणमद्भुतम्।
शारभं कवचं नाम चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥ ४ ॥

अस्य शालुवराजाख्यकवचस्य सदाशिव,
ऋषिश्छन्दोऽस्य जगति प्रोच्यते शरभेश्वरः ॥ ५ ॥

देवता प्रणवो बीजं प्रकृतिः शक्तिरुच्यते।
कीलकं पक्षिराजश्च सर्वरक्षाकरो विभु ॥ ६ ॥

परप्रयोगशान्त्यर्थं सर्वशत्रुनिवृत्तये।
चतुर्वर्गार्थसिद्ध्यर्थे विनियोगः प्रकीर्तितः ॥ ७ ॥

ऋषिं शिरसि विन्यस्य मुखेच्छन्दः सुरेश्वरि।
देवतां हृदये न्यस्य बीजं गुह्ये न्यसेत् सुधीः ॥ ८ ॥

विन्यस्य पादयोः शक्ति कीलकं नाभिमण्डले।
आपादमस्तकं देवि विनियोगस्य भावना ॥ ९ ॥

खांखीमित्यादिभिः षड्भिः करांगन्यासमाचरेत्।
हृदये देवतां ध्यात्वा पूजयित्वा समाहितः ॥ १० ॥

स्पर्शवीक्षणसंश्लिष्टप्रतिस्थानं शनैर्जपेत् ॥
ध्यानमस्य प्रवक्ष्यामि समाहितमनाः शृणु ॥ ११ ॥

ॐ अस्य श्रीशरभराजाख्यकवचस्य सदाशिवऋषिः जगतीच्छन्दः शरभेश्वरो देवता, ॐ वीजम्, ह्रीं शक्तिः, पक्षिराजः कीलकम् परप्रयोगशान्त्यर्थं सर्वशत्रुनिवृत्तये चतुर्वर्गार्थसिद्ध्यर्थं जपे विनियोगः ॥ सदाशिवय ऋषये शिरसि ॥ जगत्यै छन्दसे नमो सुखे ॥ शरभेश्वरदेवा

हृदये ॥ ॐ बीजाय नमो गुह्ये ॥ ह्रीं शक्त्यै नमः पादयोः ॥ पक्षिराजाय कीलकाय नमो नाभौ ॥ आपादमस्तकं विनियोगस्य भावना ॥ ॐ खां अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ खीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ खूं मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ॐ खैं अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ॐ खौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ॐ खः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ खां हृदयाय नमः ॥ ॐ खीं शिरसे स्वाहा ॥ ॐ खूं शिखायै वषट् ॥ ॐ खैं कवचाय हुम् ॥ ॐ खौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ खः अस्त्राय फट् ॥

रत्नाभं सुप्रसन्नं त्रिनयनममृतोन्मत्तभाषाभिरामं
कारुण्याम्भोधिमीशं वरदमभयदं चन्द्ररेखावतंसम् ।
शंखध्माताखिलाशाप्रतिहतविधिना भासामानात्मभासं
सर्वेश शालुवेशं प्रणतभयहरं पक्षिराजं नमामि ।
चन्द्रार्काग्नित्रिदृष्टिः कुलिशवरनखश्चञ्चलात्युग्रजिह्वः
काली दुर्गा च पक्षौ हृदयजठरगो भैरवो वाडवाग्निः ।
ऊरुस्थौ व्याधिमृत्यू शरभवरखगश्चण्डवाताातिवेगः
संहर्ता सर्वशत्रून् विजयतु शरभः शालुवः पक्षिराजः ॥

—इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य कवचं पठेत् ।

अथ कवचम्

श्रीशिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्ठतः ।
पिनाकी दक्षिणे पातु वामपार्श्वे महेश्वर ॥ १ ॥

शिखाग्रं पातु मे शम्भुः ललाटं पातु शंकर ।
ईश्वरो वदनं पातु भ्रुवोर्मध्ये पुरान्तकः ।। २ ।।
भ्रुवौ पातु मम स्थाणुः कपर्दी पातु लोचने ।
शर्वो मे श्रोत्रयोःपातुवागीशःपातु लम्बिकाम्।।३।।
नासयोर्मे वृषारूढो नासाग्रं वृषभध्वजः ।
स्मरारिः पातु मे ताल्वोरोष्ठयोर्भक्तवत्सलः।।४।।
पातु मृत्युंजयो दन्तान् चिबुकं पातु भूतराट् ।
परमेशः कपोलौ मे त्रिकं पातु कपालभृत्।। ५ ।।
कण्ठ पशुपतिः पातु शूली पातु हनुं मम ।
स्कन्धंद्वयं हरः पातु धूर्जटिः पातु मे भुजौ ।। ६ ।।
भुजसंधि महादेव ईशानो मे च कूर्परौ ।
मध्यसंधि जगन्नाथः प्रकोष्ठे चन्द्रशेखर ।। ७ ।।
मणिबन्धौ त्रिनेत्रो मे भीमः पातु करस्थले ।
करपृष्ठे मृडः पातु रुद्रोऽङ्गुष्ठद्वयं मम ।। ८ ।।
उमासहायस्तर्जन्यौ भर्गो मे पातु मध्यमे ।
अनामिके करालास्यः कालकण्ठः कनिष्ठिके।।९।।
गङ्गाधरोऽङ्गुलीपर्वाण्यप्रमेयो नखानि मे ।
वक्षस्तत्पुरुषः पातु कक्षौ दक्षाध्वरान्तकः ।।१०।।
अघोरो हृदयं पातु वामदेवः स्तनद्वयम् ।
भालदृक् जठरं पातु नाभि नारायणोऽव्ययः।।११।।
कुक्षी प्रभाकरः पातु कुक्षिपार्श्वे महाबलः ।
सद्योजातः कटिं पातु पृष्ठभागं तु भैरवः ।।१२।।
मोहनो जघनं पातु गुदं मम जितेन्द्रियः ।
ऊर्ध्वरेता लिङ्गदेशं वृषणं वृषभध्वजः ।।१३।।
ऊरुयुग्मं भवः पातु जानुयुग्मं भवान्तकः ।
ॐकारः पातु मे जङ्घं फट्कारोमम गुल्फके ।।१४।।
वौषट्कारः पादपृष्ठे वषट्कारोऽङ्घ्रिणोस्तले ।
स्वाहाकारोऽङ्गुलीपार्श्वे स्वधाकारोऽङ्गुलीर्मम।।१५।।

त्वरितः सर्वधर्मान् मे रोमकूपान्नृसिंहजित् ।
त्वचं पातु मनोवेगः कालजिद्रुधिरं मम ॥१६॥
पुष्टिदः पातु मे मांसं मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु ।
सर्वात्मास्थिचयं पातु मज्जां मम जगत्प्रभु॥१७॥
शुक्रं वृद्धिकरः पातु बुद्धिं वाचामधीश्वरः ।
मूलाधाराम्बुजं पातु भगवाञ्छरभेश्वरः॥१८॥
स्वाधिष्ठानमजः पातु मणिपूरं हरिप्रियः ।
अनाहतं शालुवेशो विशुद्धं जीवनायकः ॥१९॥
सर्वज्ञानप्रदो देवो ललाटं मे सदाशिवः ।
ब्रह्मरन्ध्रं महादेवः पक्षिराजोऽखिलाकृतिम्॥२०॥
सर्वलोकवशीकारः पातु मां परगर्वजित् ।
वज्रमुष्टिर्वराभीतिहस्तः कालाभ्रसंनिभः ॥२१॥
विजयासहितः पातु चैन्द्रीं ककुभमग्निजित् ।
शक्तिशूलकपालासिहस्तः सौदामिनीप्रभः॥२२॥
जयायुतो महाभीमः पातु वैश्वानरीं दिशम् ।
दण्डखेटासिमुसलशूलपाशाङ्कुशाम्बुजः ॥२३॥
यमान्तकोऽजितायुक्तोऽनिशम्पातु दिशं यमीम् ।
खड्गखेटाग्निपरशुहस्तः शत्रुविमर्दनः॥२४॥
अपराजितया युक्तः सदाव्यान्नैर्ऋतीं दिशम् ।
पाशाङ्कुशधनुर्बाणपाणिर्घोरायुतो ग्रहः॥२५॥
हरिद्राभोऽनिशं पायाद्वारुणीं दिशमात्मजित् ।
ध्वजोग्रकवचोदारभुजो दुर्गायुतः खगः ॥२६॥
चण्डवेगः शिवः पायात्सततं मारुतीं दिशम् ।
गदाक्षस्रग्वराभीतिकराम्भोजः श्रियायुतः॥२७॥

कनकाभो महातेजाः पातु कौबेरकीं दिशम् ।
त्रिशूलासिकपालाग्निदोस्तलो विद्यया युतः॥२८॥
भस्मोद्धूलितसर्वांग ऐशीं पातु पराजित ।
जपास्रक् पुस्तकाम्भोजकमण्डलुकरान्वितः॥२९॥
ऊर्ध्वं पातु गिरा युक्तः सर्वभूतहिते रतः ।
शङ्खचक्रगदाभीतिहस्तः पद्मयुतोऽव्ययः ॥३०॥
नीलांजनसमो नीलः पातालं पात्वनारतम ।
सहेतिबाहुसाहस्रः सशक्ति सर्वपालकः ॥३१॥
अनुक्ता विदिशः पातु शालुवो नरसिंहजित् ।
शरभः पातु संग्रामे युद्धे वैरिकुलान्तकः॥३२॥
सर्वसौभाग्यदः पातु जाग्रत्स्वप्नशुषुप्तिषु ।
सर्वं सम्पत्प्रदः पातु धनधान्यादिकं मम ॥३३॥
संतानदः सुताः पातु पुत्रानायुष्करोऽवतु ।
बन्धून् वृद्धिकरः पातु गृहं पातु जनेश्वर ॥३४॥
ग्रामं ग्रामेश्वरः पातु राज्यं पातु दिगम्बरः ।
राष्ट्रं शान्तिकरः पातु राजनं धर्मनाशकः॥३५॥
मार्गं दुष्टहरः पातु धर्मकर्माणि साधकः ।
बटुकः पातु मे सर्वमवस्थात्रितयेषु च॥३६॥
स्पर्शवीक्षणसंश्लिष्टप्राणरक्षां मनोजवः ।
प्रधानमूर्तिभावश्च प्रसादोऽव्वसुशुद्धिकृत् ॥३७॥
साधकः प्रणवं तारं नमो भगवतेति च ।
प्रतिनाम् चतुर्थ्यन्तं स्पर्श इत्वभिधीयते ॥३८॥
द्विज्वलप्रज्वलासाध्यं साधय द्विद्विरक्षकृत् ।
सर्वभूतेभ्यो हुम्फट च स्वाहान्तयत्तदीक्षणम्॥३९॥

स्पृशन् स्पृशंजपं कृत्वा प्रतिस्थानं समाहितः ।
प्रार्थयेदखिलश्रेष्ठ हृदिस्थं शालुवेश्वरम् ॥४०॥

मूलं जप्त्वा शतं देवि कवचं शारभं पठेत् ।
ये ग्रामघातकाः क्रूराः कपटा दौष्टिकार्भटाः ।
तस्कराः शत्रवःक्रुद्धा वधासक्ताःपलाशिनः॥४१॥

छद्माचारा विटा भ्रष्टा दिवाचरनिशाचराः ।
ते सर्वे पक्षिराजस्य पक्षवातपराहताः ॥४२॥

स्त्रीबालसहितः क्षिप्रं पितृमातृकुलान्विताः ।
भग्नचित्ता हृतस्थाना यान्तु देशान्तरं स्वयम्॥४३॥

ये तु दुष्टग्रहा रक्ष पिशाचा देवयोनयः ।
चतुष्षष्टिगणाः सप्त सप्तस्युन्मत्तका ग्रहाः॥४४॥

अष्टाशीतिर्महाभूताः सप्तकोटिमहाग्रहाः ।
नवतिर्ज्वरभेदाश्च शतभेदाश्च कृत्तिकाः ॥४५॥

पञ्चाशद्गणनाथाश्च नियुतं कृत्रिमा ग्रहाः ।
प्रेतारूढास्त्रयस्त्रिंशत् पिण्डदानपरायणाः॥४६॥

अयुतं क्षुद्रभेदाश्च प्रयुतं रुद्रजातयः ।
अष्टादश महासाध्याश्चत्वारिंशच्छिवाह्वयाः ।
द्वात्रिंशद्वह्निवक्त्राश्च त्रिंशन्मार्जारवक्त्रकाः॥४७॥

चतुःषष्ट्याखुरूपाश्च ये चान्ये क्षुद्रयोनयः ।
ते सर्वे पक्षिराजस्य शङ्खनिस्वनमोहिताः॥४८॥

निषण्णाः स्खलितस्वान्ताः प्राणत्राणपरायणाः ।
गच्छन्तु सप्रयोक्तारो देशान्तरवनिच्छया॥४९॥

ये च मूषकवैडालशुनकोरगवृश्चिकाः ।
आशीविषाः शिवा व्याला व्याघ्रा ऋक्षेभशूकराः॥५०॥

गृध्राः श्येनाः खगाः कङ्कादंशका भ्रंशका मृगाः ।
एते शरभहस्ताग्रनखक्षतविमोहिताः ॥५१॥
त्वद्रक्तचञ्छटासिक्ताः शिलातलनिताडिताः ।
सम्भेश्नेन वै शीघ्रं नश्यन्त्वखिलदुश्चरा, ॥५२॥
न दशन्तूरगाः क्वापि नातिवातोऽपि वीजतु ।
न दहत्वसहो वह्निरपां तापो न चाधिकम्॥५३॥
न वर्षत्वतिवृष्टिश्च न तपत्वशनिः क्वचित् ।
न कामत्वपमृत्युश्च न चोत्पातः कदाचन ॥५४॥
न मारो कालमृत्युश्च शरभेश्वरशासनात् ।
न म्रियन्त्वम्भसि जना न भवत्वशुभं क्वचित् ॥५५॥
न वदन्त्वमहं वाक्यं जन्तवो मम देशके ।
मास्तु वैरं च जन्तूनामन्योन्यं राज्यके मम ॥५६॥
भवन्तु सुखिनः सर्वे सर्वाः सन्तु पतिव्रताः ।
सर्वाः सूयन्तु सत्पुत्रान् पुत्रीश्च शुभलक्षणाः ॥५७॥
सर्वे सर्वाश्च नन्दनतु सन्तु कल्याणकारकाः ।
राजन्वती मही चास्तु राजा भवतु धार्मिकः ॥५८॥
संस्रवन्तु पयो गावः फलन्त्वोषधयोऽधिकम ।
भवन्तु फलदावृक्षाः सम्यग् भवतु मेऽखिलम् ।
ममास्तु तरसा नूनमात्मज्ञानमचंचलम् ॥५९॥
कामक्रोधमहालोभाः सम्मोहमदमत्सराः ।
मा सन्तु क्वापि मे सर्वे भगवन् करुणानिधे ॥६०॥
शरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दयानिधे ।
देहि मे ह्यचलां भक्ति प्रपन्नोऽस्मि पुनः पुनः ॥६१॥

गौरीवल्लभ कामारे कालकूटविषादन ।
मामुद्धर भवाम्भोधेस्त्रिपुरघ्नान्तकान्तक ।।६२।।

शालुवेश जगन्नाथ सर्वभूतहितेरत ।
पाहि मां तरसा चौरान् दुष्टान्नाशय नाशय ।।६३।।

कालभैरव विश्वेश विश्वरक्षापरायण ।
रक्ष मूषकचौरेभ्यो धान्यराशिमिमं प्रभो ।।६४।।

पक्षिराज महादेव प्रणतार्त्तिविनाशन ।
मदीयानि च वस्तूनि नित्यं पालय पालय ।।६५।।

सर्वग सर्वलोकेश सर्वदुष्टविनाशन ।
तस्करेणहृतं वस्तु द्रुतं दापय दापय ।।६६।।

येऽकर्मवादिनः क्षुद्राः क्षुद्रोपद्रवकारकाः ।
सर्वाचारपरित्यक्ता मानहीनाश्च रोधकाः ।
ते सर्वे शालुवेशस्य मुसलायुधचूर्णिताः ।।६७।।

नश्यन्तु निमिषार्धेन पावकावृततूर्णवत् ।
ये जना द्रोहिणोऽपाशास्त्वनालोचितभाषिणः ।।६८।।

सत्कर्मविघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु परायणाः ।
ते शालुवेशहस्ताग्रखड्ग निर्भिन्नदेहिनः ।।६९।।

पतन्तु भूतले याम्यां प्राणास्तेषां प्रयान्तु हि ।
त्वदङ्घ्रिध्याननिर्दग्धपापकोशाय मन्त्रिणे ।।७०

मह्यां द्रुह्यन्ति ये तेषां विभवा विक्षरन्त्वरम् ।
त्वदाचारपरं भक्तं साधकं मां विवेकिनम् ।।७१।।

ये चाक्रामन्ति संग्रामे ते गच्छन्तु पराहताः ।
त्वदीयेनैव मार्गेण संचरन्तं जयातुरम् ।।७२।।

ये वदन्ति परीवादं भ्रान्ताः शीघ्रं भवन्तु ते ।
त्वद्हासममलं घोरं ये मां तर्जयितुं बलात् ॥७३॥
मनसाप्यनुमन्यन्ते तत्स्वान्तं भ्रमतु क्षणात् ।
मनसा कर्मणा वाचा ये कुर्वन्त्यतिदुस्सहम् ॥७४॥
ते महाशोकरोगाब्धौ पतन्त्वाशु शिवाज्ञया ।
मदीयानि च वस्तूनि ग्रहीतुं योऽवलोकते ॥७५॥
तत्क्षणादेव नष्टाक्षो भवत्वाशु शिवाज्ञया ।
मदीयद्रव्यमाहृत्व ये गच्छन्तीह तस्कराः ॥७६॥
सिंहारिपाशम्बद्धास्ते गच्छन्तु प्रदक्षिणम् ।
सीमातीताश्च ये चौरा गृहीतद्रव्यसंचयाः॥७७॥
अवशावयवाः सर्वे ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ।
तस्करान्निम्नगातीताः स्वात्तधान्यधनादिका ॥७८॥
पक्षिराजाङ्कुशाकृष्टाः समागच्छन्तु ते द्रुतम् ।
समाहृतपदार्थौघा देशातीताश्च तस्कराः॥७९॥
शरभेहला ष्टास्त आगच्छंन्तु सानुगाः ।
चौरा गृहितुमुद्युताः समानपरिषालिनः ॥८०।
समाहृतपदार्थाढ्यास्त आगच्छन्तु सानुगाः।
शरभेशलाकृष्टास्त आगचछन्तु मद्गृहम् ॥८१॥
ते शालुवेशपक्षोत्थवातैर्गचछन्तु सत्वरम् ॥८२॥
शान्तं विवेकिन भक्तं त्वदङ्घ्रिध्यानतत्परम् ।
ब्रुवन्ति येःसहं प्राणास्तेषां यान्तु यमीयसीम् ॥८३॥
षट्त्रिंशत्कोष्ठके यन्त्रे रेखाशूलाग्रसाधिते ।
स्वेच्छामन्त्रं लिखित्वा तु जपेदाराध्यः साधकः॥८४॥

उदङ्मुखः सहस्रं तु रक्षणाय जपेन्निशि ।
नष्टाहरणके पञ्चरात्रं पश्चिमदिङ्मुखः ॥८५॥
मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत् ।
रोगनिग्रहणे चाष्टरात्रमाग्नेयदिङ्मुखः ॥८६॥
इति गुह्यं महामन्त्रं परमं सर्वसिद्धिदम् ।
शरभेशाख्यकवचं चतुर्वर्गफलप्रदम् ॥८७॥
प्रत्यहं प्रतिपक्षं वा प्रतिमासमथापि वा ।
यो जपेत्प्रतिवर्षे वा वरेण्यः स शिवो भवेत्॥८८॥
एवं हि जपतः पुंसः पातकं चोपपातकम् ।
तत्सर्वेसिद्धि समाश्रित्य देहान्ते स शिवो भवेत्॥८९॥
दशाब्दं यो जपेन्नित्यं प्रातरुत्थाय साधकः ।
सर्वसिद्धि समाश्रित्य देहान्ते स शिवो भवेत्॥९०॥
त्रिकालं ध्यान पूर्व तू जपेद् द्वादसवार्षिकम् ।
कायेनानेन वै देवि जीवन्मुक्तो भवेत्तु सः ॥९१॥
शतवारं जपेन्नित्यं मण्डलं यो वरानने ।
सोऽणिमादीन् गुणान्प्राप्य विचरेत्स्वेच्छया सदा ॥९२॥
अतलादिधरण्यादिभुवनानि चतुर्दश ।
विचरेत्कामतः सर्वैः पूज्यमातो तथासुखम् ॥९३॥
त्रिकालं यो छपेन्नित्यमष्टोत्तरसहस्रकम् ।
सदेहः शरभस्य सारुप्यं लभतेऽम्बिके ॥९४॥
पण्मासं यो जपेदेवं प्रयतस्तु दृढव्रतः ।
मद्रूपधारकैर्मर्त्यैः सर्वसिद्धिप्रदायकैः ॥९५॥
मम लोकेषु सम्पूज्यो विष्णुलोके तथैव च ।
ब्रह्मलोके च रमते सर्वत्र न निवार्यते ॥९६॥

इन्द्राग्नियमयक्षेशजलेशपवनैः सह ।
सोमेशानकलक्ष्मीशैर्दिशाम्पालैश्च पूज्यते ॥९७॥
आदित्यसोमपृथिवीजबुधश्रीगुरुभार्गवैः ।
पूज्यते स ग्रहैः सर्वैः शनिराहुसकेतुभिः ॥९८॥
ऋत्वङ्गिरःपुलस्त्यैश्च पुलहात्रिमरीचिभिः ।
दक्षकश्यपभृग्वाद्यैर्योगिभिश्च सुपूज्यते ॥९९
भैरवैर्वसुभी रुद्रैरादित्यैर्वालिखिल्यकैः ।
दिग्गजैश्च महानागैर्दिव्यास्त्रैर्दिव्यवाहनैः ॥१००॥
माहेश्वरैर्महारत्नैः कामधेनुसुरद्रुमैः ।
सरिद्भिः सागरैः शैलैर्देवताभिस्तपोधनैः ॥१०१॥
दानवैः राक्षसैः क्रूरैः सिद्धगन्धर्वकिन्नरैः ।
यक्षविद्याधरैर्नागैरप्सरोभिः स पूज्यते ॥१०२॥
अपस्मारग्रहैर्भीमैरुन्मत्तैर्ब्रह्मराक्षसैः ।
वेतालैः खेचरैर्मर्त्यैः कूष्माण्डैः राक्षसग्रहैः ॥१०३॥
ज्वालावक्त्रैस्तमोहारैः स्त्रीग्रहैः पावकग्रहैः ।
भूतप्रेतपिशाचाद्यैर्ग्रहैः सर्वैः स पूज्यते ॥१०४॥
ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च जातिभिः ।
पशुपक्षिमृगव्यालैः पूज्यते सर्वजन्तुभिः ॥१०५॥
किमत्र बहुना देवि तव वक्ष्ये तथातथम् ।
मया च विष्णुना चैव विश्वकर्त्रा च पाल्यते॥१०६॥
भवत्या च गिरालक्ष्म्या ब्रह्माण्याद्याष्टशक्तिभिः ।
गणेश्वरादियोगीन्द्रैर्योगिनीभिश्च पाल्यते ॥१०७॥
य इदं प्रजपेत्तस्यासाध्यं नव च विद्यते ।
कवचेन्द्रं महामन्त्रं जपेदस्मादनुत्तमम् ॥१०८॥

उच्चाटने मरुद्वक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः ।
प्रागाननोऽभिवृद्धौ तु सर्वत्वीशानदिङ् मुखाः ॥१०९॥
यः जपेत्कवचं नित्यं त्रिकालं यानपूर्वकम् ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सहसा साधकोत्तमः ॥११०॥
देवदेव महादेव शिव कारुण्यवारिधे ।
पाहि मां प्रणतं स्वामिन् स्वामिम् प्रणित
संततमम ॥१११॥
यत्कृत्यं तत्र कृतं यदकृत्यं कृत्यवच्चरितम्
उभयोः प्रायश्चित्त शिव तव नामरिद्धयो
गिरितम् ॥११२॥



॥ श्री शिवाष्टकम् ॥

प्रभु प्राणनाथ विभुं विश्वनाथं
जगन्नाथनाथंसदानन्दभाजाम् ॥
भवद्भव्य भूतेश्वरं भूतनाथं
शिवं शङ्करं शम्भुमीशानमीडे ॥ १ ॥
गले मुण्डमालं तनौ सर्पजालं
महाकालकालं गणेशाधिपालम् ॥
जटाजूट गङ्गोत्तरंगैर्विशालं
शिवं शङ्करं शम्भू मीशानमीडे ॥ २ ॥

मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं
महामण्डलं भस्मभूशाधरन्तम् ॥
अनादि ह्यपारं महामोहमारं
शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ३ ॥
तटाधो निवासं महाट्टाट्टहासं
महापापनाशं सदा सुप्रकाशम् ॥
गिरिशं गणेशं सुरेशं महेशं
शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ४ ॥
गिरीन्द्रात्मजा संगृहीतार्धदेहं
गिरौ संस्थितं सर्वदासन्नगेहम् ॥
परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं
शिवशंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ ५ ॥

कपालं त्रिशूलं कराभ्यां दधानं
पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् ।।
बलीवर्दयानं सुराणां प्रधानं
शिवं शंकरं शम्भुमीशाननीडे ।। ६ ।।

शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं
त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् ।।
अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं
शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ।। ७ ।।

हरं सर्पहारं चिताभू-विहारं
भवं वेदसारं सदानिर्विकारम् ।।
श्मशाने वसन्तं मनोजं दहन्तं
शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ।। ८ ।।

स्तवं यः प्रभाते नरः शूलपाणेः
पठेत्सर्वदाभर्गं भावानुरक्त ।।
सुपुत्रं धनं धान्यमित्रं कलत्रं
विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयाति ।। ९ ।।

।। इति श्री शिवाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

॥ शंकराष्टकम् ॥

शीर्षजटा गणभारं गरलाहारं समस्तसंहारम् ।
कैलासाद्रिविहारं पारं भववारिधे रहं वन्दे ॥ १ ॥
चन्द्रकलोज्ज्वलभालं कंठव्यालं जगत्त्रयीपालम् ।
कृतनरमस्तकमालं कालं कालस्य कोमल वन्दे ॥२॥
कोपेक्षणहृतकामं स्वातमारामं नगेन्द्रजावामम् ।
संस्सृतिशोकविरामं श्याम कण्ठेन कारणं वन्दे ॥३॥
कटि तट विलसितनागं खण्डितयागं भहाद्भु-
तत्यागं
विगतविषयरसराग भागं यज्ञेषु विभ्रूतं वन्दे ॥४॥
त्रिपुरादिकदनुजान्तं गिरिजाकान्तं सदैव
संशान्तम् ।
लीलाविजितकृतांतं भांतं स्वान्तेषु देहिनां
वन्दे ॥५॥
सुरसरिताप्लुतकेशं त्रिदशकुलेशं हृदालयावेशम् ।
विगताशेषक्लेशं देशं सुर्वेष्टसंपदं वन्दे ॥६॥
करतलकलितपिनाकं विगतजराकं सुकर्मणां
पाकं ।
परपदवीतवराकं नाकङ्गमापूगवन्दितं वन्दे ॥७॥
भूतिविभूषितकायं दुस्तरमायं भवं
विवर्जितोपायं
प्रथम समूह सहायं सायं प्रातर्निरन्तरं वन्दे ॥८॥
यस्तु पदाष्टकमेतब्रह्मानन्देन निर्मितं नित्यम् ।
पठति समाहितचेयाः प्राप्नोत्यन्ते स शैवमेव
पदम् ॥९॥
इति श्रीमत्परम हंस ब्रह्मनन्द वि० श्रीशंकराष्टक सम्पूर्णम् ।

श्रीरुद्राष्टकस्तोत्रम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं ।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ॥
निजं निगुर्णं निर्विकल्पं निरीहं ।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥ १ ॥

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं ।
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं ।
गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥ २ ॥

तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं ।
मनोभूत कोटि प्रभा श्रीशरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा ।
लसद्भूलबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥ ३ ॥

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं ।
प्रसन्नाननं नीलकठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं ।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥ ४ ॥

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं ।
अखंडं अजं भानुकोटप्रकाशं ॥
शूल निर्मूलनं शूलपाणिं ।
भजेऽहं भवानीपति भावगम्य ॥ ५ ॥

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी ।
सदा सज्जानानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी ।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ ६ ॥

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं ।
भजन्तीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं ।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥ ७ ॥

न जानामि योगं जपं नैव पूजां ।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं ।
प्रभो पाहि आपन्न मामीश शंभो ॥ ८ ॥

श्लोक—रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेणा हरतोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ ९ ॥

—•—

श्री विश्वनाथाष्टकस्तोत्रम्

गंगातरंगरमणीयजटाकलाप,
गौरीनिरन्तरविभूषितवामभागम् ।
नारायणप्रियमनंगमदापहारं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ १

वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं,
वागीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ २ ॥

भूताधिपं भुजगभूषणभूषितांगं,
व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशांकुशभयवरप्रदशूलपाणिं,
वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ३ ॥

शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं,
भालेक्षणानलविशोषितपञ्चबाणम् ।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ४ ॥

पंचाननं दुरितमत्तमतंगजानां,
नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नगानाम् ।
दावानलं मरणशोकजराटवीनां,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ ५ ॥

तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयं,
आनन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।। ६ ।।

आशां विहाय परिहृत्य परस्यनिंदां,
पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।। ७ ।।

रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं,
वैराग्यशांतिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं,
वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ।। ८ ।।

वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य,
व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनंतकीर्तिं,
सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ।। ९ ।।

विश्वनाथष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ,
शिवलोकमनाप्नोति शिवेन सह मोदते ।। १० ।।

इति श्रीवेदव्यासकृतं विश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ।

॥ श्री शिवनामावल्याष्टकम् ॥

हे चन्द्रचूड मदनांतक शूलपाणे
स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शंभो ।
भूतेश भीतिभयसूदन मामनाथं
संसारदुःख गहनाज्जगदीश रक्ष ॥१॥

हे पार्वती हृदयवल्लभ चन्द्रमौले
भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप ।
हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे
संसारदुःख गहनाज्जगदीश रक्ष ॥२॥

हे नीलकंठ वृषभध्वज पंचवक्त्र
लोकेश शेष बलय प्रमथेश शर्व ।
हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां
संसारदुःख-गहनाज्जगदीश रक्ष ॥३॥

हे विश्वनाथ शिवशंकर देवदेव
गंगाधर प्रमथनायक नन्दिकेश ।
बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥४॥

वाराणसी पुरपते मणिकर्णिकेश
वीरेश दक्षमखकाल विभो गणेश ।
सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवासनाथ
संसार, दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥५॥

श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो
हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ ।
भस्मांगराग नृकपालकलापमाल,
संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥६॥

कैलासशैलविनिवासवृषाभकपे
हे मृत्युञ्जयत्रिनयन त्रिजगन्निवास ।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ,

संसार दुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥७॥
विश्वेश विश्वभवनाशित विश्वरूप,
विश्वात्मकत्रिभुवनैकगुणाभिवेश ।
हे विश्ववन्द्यकरुणामय दीनबन्धो.
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥८॥
गौरीविलासभुवनाय महेश्वराय,
पंचाननाय शरणागत कल्पकाय ।
शर्वाय सर्वजगतामधिपाय तस्मैः
दारिद्रयदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥९॥
इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवनामावल्याष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥
मन्दाकिनीसलीलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय ।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥

यक्षस्वरूपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥

शिवषडाक्षरस्तोत्रम्

श्री गणेशाय: नमः ॥
ॐ कारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमो नमः ॥ १ ॥

नमन्ति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः ।
नरा नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः ॥ २ ॥

महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः ॥ ३ ॥

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः ॥ ४ ॥

वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कन्ठभूषणम् ।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः ॥ ५ ॥

यत्र तत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः ।
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः ॥ ६ ॥

षडाक्षरमिदं स्तोत्रं य पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ७ ॥

श्री वेदसारशिवस्तोत्रम्

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं,
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् ।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गंगवारिं,
महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि ॥ १ ॥

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं,
विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम् ।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं,
सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥ २ ॥

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं,
गजेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम् ।
भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं,
भवानीकलत्रं भजे पंचवक्त्रम् ॥ ३ ॥

शिवाशान्तशम्भो शशांकार्धमौले,
महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन् ।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप,
प्रसीद प्रसीद प्रभो विश्वरूप ॥ ४ ॥

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं,
निरीहं निराकारमोंकार वेद्यम्
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं,
तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥ ५ ॥

न भूमिर्नं चापो न वह्निर्न
वायुर्नचाकाश मध्ये न तन्द्रा न निद्रा ।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो,
न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिस्तमीडे ॥ ६ ॥

अज शाश्वत कारण कारणाना,
शिवं केवलं भासकं भासकानाम् ।
तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनं,
प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥ ७ ॥

नमस्ते-नमस्ते विभो विश्वमूर्ते,
नमस्ते-नमस्ते चिदानन्दमूर्ते ।
नमस्ते-नमस्ते तपोयोगगम्यं,
नमस्ते-नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्यम् ॥ ८ ॥

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ,
महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र ।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे,
त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥ ९ ॥

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे,
गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् ।
काशीपते करुणया जगतदेकस्त्वं,
हरंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥ १० ॥

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे,
त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश,
लिंगात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन् ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचित, वेदसारशिवस्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

॥ महादेव स्तोत्रम् ॥

मोह-तम-तरणि, हर, रुद्र, शंकरशरण, हरण, मम
शोक लोकाभिरामं ।

बाल-शशि-भाल, सुविशाल लोचन-कमल, काम-
सतकोटि-लावण्य-धामं ॥
कंबु-कुंदेंदु-कर्पूर-विग्रह रुचिर, तरुण-रवि-कोटि तनु
तेज भ्राजै ।
भस्म सर्वांग अर्धांग शैलात्मका, व्याल, नृकपाल-माला
विराजे ॥२॥
मौलिसंकुल जटा-मुकुट विद्युच्छटा, तटिनि-वर-वारि
हरि-चरण-पूतं
श्रवण कुंडल, गरलकंठ, करुणाकंद, सच्चिदानंद,
वंदेऽवधूतं ॥३॥
शूल-शायक-पिनाकासि-कर शत्रु-वन-दहन इव
धूमध्वज, वृषभ-यानं
व्याघ्र-गज-चर्म-परिधान, विज्ञान-घन सिद्ध-सुर-मुनि-
मनुज-सेव्यमानं ॥४॥

तांडवित्त-नृत्यपर, डमरु डिंडिमप्रवर, अशुभ इव
भाति कल्याणराशी
महाकल्पांत ब्रह्मांड-मंडल-भवन, भवन कैलाश, आसीन
काशी ।।५।।

यज्ञ, सर्वज्ञ, यज्ञेश, अच्युत, विभो, विश्व भवदशसभव
पुरारी।
ब्रह्मेन्द्र, चंद्रार्क वरुणाग्नि, वसु, मरुत, यम, अर्चि
भवदंघ्रि सर्वाधिकारी ।।
अकल, निरुपाधि, निर्गुण, निरंजन, ब्रह्म, कर्म-
पथमेकमज निर्विकार।

अखिलविग्रह, उग्ररूप, शिवभूपसुर, सर्वगत, सर्व-
सर्वोपकार ।।
ज्ञान-वैराग्य, धन-धर्म, कैवल्य-सुख, सुभग सौभाग्य
शिव ! सानुकूलं।
तदपि नर मूढ आरूढ संसार-पथ, भ्रमत भव विमुख
तव पादमूलं।
नष्टमति, दुष्टः अति, कष्ट-रत, खेदगत, दास तुलसी
शंभुशरण आया।
देहि कामारि ! श्रीराम-पद-पंकजे भक्ति अनवरतगत
भेद-माया ।।

॥ दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम् ॥

विश्वं दर्पण दृश्यमान नगरी तुल्यं निजान्तर्गतं,
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोदभूते तथा निद्रया ।
यः साक्षीकुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाव्ययं,
तस्मै श्रीगुरुमूर्तने नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥१॥

बीजस्यान्तरिकं रो जगदिदं प्राङ्‌निर्विकल्पं,
पुनर्मायाकल्पितदेशकालकमनावैचित्र चित्राकृतिम् ।
मायाबीज विजृम्भयत्यषि महायोगीव यः स्वच्छया,
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदशिणामूर्तये ॥२॥

यस्यैव स्फुरणं सदात्मकसतत्कल्पार्थकं भासते
साक्षात्तत्त्वमसीति वेदवचसां यो बोधयत्याश्रितान् ।
यत्साक्षात्करणेद्भवन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूतये ॥३॥
नानाछिद्रवटोदरस्थितमहा दीपप्रभाभास्वरं
ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादि करणं द्वारा वह्निः स्पन्दते ।
जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्त जगत
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥४॥
देहं प्राणमपिन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धि च शून्यां
विदुः स्त्रीबालान्ध जड़ोपमास्त्वहमिति भ्रांताभृशं
वादिनः ।
माया शक्ति विलास कल्पितमहा व्यमोह संहारिणे
तस्मै श्रीगुरुमूर्तयेनमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥५॥

राहुग्रस्त दिवाकरेन्दु सदृशी मायासमाच्छा-
दनात्सन्मात्रः
करणोपसंहरणतं योऽभूत्सुषुप्तः पुमान् ।
प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥६॥

बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि
व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा
स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नमः इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥७॥

विश्वं पश्यति कार्य कारणतया स्व स्वामिसम्बन्धतः
शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मनो भेदतः ।
स्वप्ने जाग्रति वा य एव पुरुषो मायापरिभ्रा-
मितस्तस्मै
श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥८॥

भूरम्भस्यनलो निलाम्बर महर्नाथो हिमांशुः
पुमान्नित्यंभाति
चराचरात्मकमिदं यस्यैव मूर्त्यष्टकम्
नान्यत्किंचन् विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभो
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥९॥

सर्वात्मत्वमितिस्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिस्तवे
तेनास्यश्रवणात्तथार्थमननाद्ध्यानाच्च सकीर्तनात् ।
सर्वात्मत्व महाविभूति सहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः
सिद्ध्येत्तत्पुनरष्टधा परिणतञ्चै श्वर्यमव्याहतम् ॥१०॥

वट विटप समीपे भूमि भागे निषण्णं
सकल मुनि जनानां ज्ञान दाता रमरात ।

त्रिभुवनगुरुमोश दक्षिणा मूर्त्तिदेवं
जनम मरण दुःखच्छेददक्षं नमामि ॥११॥

चित्र वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्यगुरुर्युवा।
गुरोस्तुमौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु च्छिन्न संशयाः ॥१२॥

ॐ नमः प्रणवार्थात शुद्धज्ञानिकमूर्त्तये।
निर्मलाय प्रशान्ताय दक्षिणामूर्त्तये नमः ॥१३॥

निधये सर्वविद्यानां भिषजे भवरोगिणाम्।
गुरवे सर्वलोकानां दक्षिणामूर्त्तये नमः ॥१४॥

मौनं व्याख्या प्रकटित परब्रह्म तत्त्वं
युवानं वर्षिष्ठान्ते वसदृषिगणैरावृतं ब्रह्मनिष्ठैः।
आचार्येन्द्रं करकलितचिन्मुद्रमानन्दरूपं
स्वात्मारामं मुदित वदनं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥१५॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं
दक्षिणामूर्तिस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्री दारिद्र्यदहनस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय,
कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय ।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।। १ ।।

गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय,
कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय ।
गंगाधराय गजराजविमर्दनाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।। २ ।।

भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय,
उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय ।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।। ३ ।।

चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय,
भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय ।
मंजीरपादयुगलाय जटाधराय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।। ४ ।।

पंचाननाय फणिराजविभूषणाय,
हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय ।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।। ५ ।।

भानुप्रियाय भवसागरतारणाय,
कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ।। ६ ।।

रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय,
नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ७ ॥
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय,
गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय,
दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ८ ॥
वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं, सर्वरोगनिवारणं,
सर्वसम्पत्करं नित्यं, पुत्रपौत्रादि वर्द्धनम् ॥ ९ ॥
त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, स हि स्वर्गमवाप्नुयात्।
पूजा काले पठेन्नित्यं, लक्ष्मी वसति सर्वदा ॥ १० ॥
इति श्रीमहर्षिवसिष्ठविरचितं दारिद्र्यदहनस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

जय देव जगन्नाथ जय शंकर शाश्वत ।
जय सर्वसुराध्यक्ष जय सर्वसुरार्चित ॥१॥
जय सर्वगुणातीत जय सर्व वरप्रद ।
जय नित्यं निराधर जय विश्वभराव्यय॥२॥
जय विश्वैकवन्द्येन जय नागेन्द्रभूषण ।
जय गौरीपते शम्भो जय चन्द्रार्धशेखर॥३॥
जय कोट्यर्क संकाश जयनन्तगुणाश्रय ।
जय भद्र विरूपाक्ष जयचिन्त्यनिरंजन ॥४॥
जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभंजन ।
जय दुस्तरसंसार सागरोत्तारण प्रभो ॥५॥
प्रसीद मे महादेव संसारार्तस्य खिद्यतः ।
सर्वपापक्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर ॥६॥
महादारिद्रयमग्नस्य महापापहतस्य च ।
महाशोकनिविष्टस्य महारोगातुरस्य च॥७॥
ऋणभारपरीतस्य दह्यमानस्य कर्मभिः ।
ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद मम शंकर ॥८॥
दरिद्रः प्रार्थयेद्देवं प्रदोषे गिरिजापतिम् ।
अर्थाढ्यो वाऽर्थं राजो वा प्रार्थयेद्दे-
वमीश्वरम् ॥९॥
दीर्घमायुःसदारोग्यं कोषवृद्धिर्बलोन्नतिः ।
ममास्तु नित्यमानन्दः प्रसादात्तव शंकर ॥१०॥
शत्रवः संक्षयं यान्तु प्रसीदन्तु मम प्रजाः ।
नायान्तु दस्यवो राष्ट्रे जनाः सन्तु
निरापद ॥११॥
दुर्भिक्षमारिसन्तापाः शमं यान्तु महीतले ।

सर्वसस्यसमृद्धिश्च भूयात्सुखमया दिशः ॥१२॥
एवमाराधयेद्देवं पूजान्ते गिरिजापतिम् ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्दक्षिणाभिश्च
पूजयेत् ॥१३॥
सर्वपापक्षयकरी सर्वरोगनिवारिणी ।
शिवपूजा मयाख्याता सर्वाभीष्टफलप्रदा ॥१४॥

॥ हिमालयकृतशिवस्तोत्रम् ॥

हिमालय उवाच

त्वं ब्रह्मा सृष्टिकर्त्ता च त्वं विष्णुः परिपालकः ।
त्वं शिवः शिवदोऽनन्तः सर्वसंहारकारकः ॥१॥
त्वमीश्वरो गुणातीतो ज्योतिरूपः सनातनः ।
प्राकृतः प्राकृतिशश्च प्राकृतः प्राकृतेः परः ॥२॥
नानारूपविधाता त्वं भक्तानां ध्यानहेतवे ।
येषु रूपेषु यत्प्रीतिस्तत्द्रूपं बिभर्षि च ॥३॥
सूर्यस्त्वं सृष्टिजनकः आधारः सर्वतेजसाम् ।
सोमस्त्वं सस्यपाता च सततं शीतरश्मिना ॥४॥
वायुस्त्वं वारुणस्त्वं च विद्वांश्च विदुषां गुरुः ।
मृत्युञ्जयो मृत्युमृत्युः कालकालो यमान्तकः॥५॥
वेदस्त्वं वेदकर्त्ता च वेदवेदांग पारगः ।
विदुषां जनकस्त्वं च विदांश्च विदुषां गुरुः ॥६॥
मन्त्रस्त्वं हि जपस्तवं हि तपस्त्वं तत्फलप्रदः ।
वाक्त्वं गाधिदेवस्त्वं तत्कर्त्ता तद्गुरुः स्वयम्॥७॥
अहो सरस्वतीबीजं कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।
इत्येवमुक्त्वा शैलेन्द्रस्तस्थौ धृत्या पदाम्बुजम्॥८॥
तत्रोव स तमाबोध्य चावरुह्य वृषाच्छिवः ।
स्तोत्रमेतन्महापुण्यं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नर ॥९॥

मुच्यते सर्वपापेभ्यो भयभयेश्च भवार्णवे।
अपुत्रो लभते पुत्रं मासमेकं पठेद्यदि ॥१०॥

भार्याहीनो लभेद्भार्यां सुशीला सुमनोहराम्।
चिरकालगतं वस्तु लभते सहसा ध्रुवम् ॥११॥

राज्यभ्रष्ठो लभेद्राज्यं शंकरस्य प्रसादतः।
कारागरे श्मशाने च शत्रुग्रस्तेऽतिसंकटे ॥१२॥

गम्भीरेऽतिमलांकीर्णे भग्नपोते विषादने।
रणमध्ये महाभीते हिंस्रजन्तु समन्विते।
सर्वतो मुच्यते स्तुत्वा शंकरस्य प्रसादतः ॥१३॥

इति श्री ब्रह्मवैवर्तमहापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे
हिमालयकृत श्रीवस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

॥ शिव स्तुति ॥

चापेयगौरार्द्ध शरीरकायै कर्पूरगौरार्धशरीरकाय।
धम्मिल्लकायै च जटाधराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥१॥

रणत्क्वणत्कंकणनूपुरायै मिलत्फणा भासुरनूपुराय।
हेमांगदाय भुजगांगदाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥२॥

कस्तूरिकाकुङ्कुमचर्चितायै चितारजः पुञ्जविचर्चिताय।
सुकुण्डलायै फणिकुण्डलाय नमः शिवाय च नमः शिवाय ॥३॥

मन्दारमालाकुलितालकायै कपालमालांकितशेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥४॥

प्रोत्फुल्लनीलोत्पललोचनायै विकासपंकेरुहलोचनाय।
समेक्षणायै विषमेक्षणाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥५॥

अम्भोरुहश्यामलकुन्तलायै तडित्प्रभाभासजटाधराय।
जगज्जनन्यै जगदेकपित्रे नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥६॥

सदाशिवानां प्रियाभूषणायै सदाशिवाणां प्रियाभूषणाय।

 शिवान्वितायै च शिवान्विताय नमः शिवायै च नमः शि० ॥७॥
प्रपञ्चसृष्टेर्मुखवासदायै त्रैलोक्यसहारकृतान्तकाय ।
कृतस्मरायै विकृतस्मराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ।।८॥
नमस्ते भगवद्रुद्रभास्करामिततेजसे ।
नमो भवाय देवाय शिवाय परमात्मने ॥९॥
शान्ताय क्षितिरूपाय सदाऽसुरभिदे नमः ।
ईशानाय नमस्तुभ्यं स्पर्शमात्राय ते नमः ॥१०॥
महादेवाय सोमाय अमृतेशाय ते नमः ।
उग्राय यजमानाय नमो मीढुष्टमाय ते ॥११॥
नमोऽस्तुते शंकर शांतिमूर्ते नमोऽस्तुते चंद्रकलावतंस ।
नमोऽस्तुते कारणकारणाय नमोऽस्तुते कारणवर्जिताय ॥१२॥
स एव धन्यस्तव भक्तिभाजां तवार्चनं यः कुरुते सदैव ॥१३॥
मन्त्रहीन क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजित मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥१४॥
इति श्री स्कन्दपुराणे शिवस्तुति समाप्तम ।

॥ कल्किकृतशिवस्तोत्रम् ॥

गौरीनाथं विश्वनाथ शरण्य,
भूतावासं वासुकीकण्ठभूषम् ।

त्र्यक्षं पञ्चास्यादिदेवं पुराणं,
वन्दे सान्द्रानन्दसन्दोहदक्षम् ॥१॥
योगाधीशं कामनाशं कराल,
गङ्गासङ्गक्लिन्नमूर्धानमीशम् ।
जटाजूटटोपनिक्षिप्तभावं,
महाकालं चन्द्रभालं नमामि ॥२॥

श्मशानस्थं भूतवेतालसङ्गं,
नानाशस्त्रैःखड्गशूलादिभिश्च ।
व्याघ्रात्युग्रा बाहवो लोकनाशे,
यस्य क्रोधोद्भूतलोकऽस्तमेति ॥३॥

यो भूतादिः पञ्चभूतैः, सिसृक्षु
स्तन्मात्रात्माकाल कर्म स्वभावैः ।
प्रहृत्येदं प्राप्य जीवत्वमीशो ब्रह्म-
नन्दे रमन्ते त नयामि ॥४॥

स्थितौ विष्णुःसर्वजिष्णुः सुरात्मा
लोकान् साधून्धर्मसेतून्विभर्षि ।
ब्रह्माद्यंशैर्योऽभिमानो गुणात्मा,
शब्दाद्यङ्गैस्तं परेशं नमामि ॥५॥

यस्याज्ञया वायवो वान्ति लोके,
ज्वलत्यग्निः सविता याति तप्तन् ।
शीतांशुः खे तारकासंग्रहश्च
प्रवर्तन्ते तं परेशं प्रपद्ये ॥६॥

यस्य श्वासात्सर्वधात्री धरित्री
देवो वर्षत्यम्बु कालः प्रमाता ।
-मेरुर्मध्ये भुवनानां च भर्ता
तमीशानं विश्वरूपं नमामि ॥७॥

इति श्री कल्किपुराणे कल्किकृतं शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥ असितकृतशिवस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरो नमस्तुभ्य शिवाय शिवदाय च ।
योगीन्द्राणांयोगीन्द्र गुरूणां गुरूवे नमः ॥ १ ॥
मृत्योर्मृत्युस्वरूपेण मृत्युससारखण्डन ।

मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ।। २ ।।
कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण ।
कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तु ते ।। ३ ।।
गुणातीत गुणाधार गुणबीज गुणात्मक ।
गुणेश गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः ।। ४ ।।
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मभावे च तत्पर ।
ब्रह्मबीजस्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोऽस्तु ते ।। ५ ।।

इति स्तुत्वा शिवंनत्वा पुरस्तस्थौ मुनीश्वरः ।
दीनवत्साश्रुनेत्रश्च पुलकाञ्चितविग्रहः ।। ६ ।।

असितेन कृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत् ।
स लभेद्वैष्णवं पुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् ।
भवेद्धनाढ्योऽदुःखी च मूको भवति पण्डितः ।। ७ ।।

अभार्यो लभते भार्यां सुशीलां च पतिव्रताम् ।
इह लोके सुखंभुक्त्वा यात्यन्ते शिवसन्निधिम् ।। ८ ।।

इदं स्तोत्र पुरा दत्तं ब्रह्मणा च प्रचेतसे ।
प्रचेतसा स्वपुत्रायासिताया दत्तमुत्तमम् ।। ९ ।।

इति श्री ब्रह्मवैवर्ते महापुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे
असितकृत शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्री शिव-ताण्डवस्तोत्रम्

जटाकटाहसंभ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी
विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनी ।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।। १ ।।
जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले
गले वलम्ब्यलम्बितांभुजङ्गतुङ्गमालिकाम्
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।। २ ।।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर—
स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणमणिप्रभ
कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा—
निपीतपंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरोजटालमस्तु नः ॥ ५ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर,
प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजंगराजमालयानिबद्धजाटजूटकः,
श्रियं चिरायजायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्वल,
द्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक,
प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचनेरतिर्मम ॥ ७ ॥

नवीनमेघमण्डलानिरुद्धदुर्धरस्फुर,
त्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतुकृत्तिसिन्धुरः,
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ॥ ८ ॥

प्रफुल्लनीलपंकजप्रपञ्चकालिमप्रभा—
वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्,
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिद,

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अखर्वसर्वमंगलाकलाकदम्बमंजरी,
रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं,
गजान्तकान्धकान्तकन्तमान्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

जयत्यदभ्रविभ्रमस्फुरद्भुजंगमश्वसद्,
विनिर्गमक्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिन्धिमिन्धिमिन्ध्वनन्मृदंगतुङ्गमंगल,
ध्वनिक्रमप्रवर्त्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजंगमौक्तिकस्रजो,
र्गरिष्ठरत्नलोष्टयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः,
समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिव भजाम्यहम् ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्,
विमुक्तदुर्मतिःसदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः,
शिवेतिमन्त्रमुच्चरन्सदासुखीभवाम्यहम् ॥ १३ ॥

निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका,
निगुम्फनिर्भरक्षरन्मधूष्णिकामनोहरः ।
तनोतु नो मनोमुद विनोदनोमहर्निशं,
परश्रियः परम्पदन्तदंगजत्विषांचयः ॥ १४ ॥

प्रचण्डवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी,
महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहूतजल्पना ।
विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः,
शिवेतिमन्त्रभूषणजगज्जयायजायताम् ॥ १५ ॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं,

यः शम्भुपूजनमिदं पठति प्रदोषे ।
तस्यस्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां,
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १६ ॥

श्री शिवमहिम्नस्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी,
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नस्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधिगृणन्,
ममाप्येषस्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ।
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो,
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतविधिगुणः कस्य विषयः,
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ।
मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवत,
स्तवब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः,
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्,
त्रयीवस्तुव्यस्तं तृसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥
किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभूनम्,
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्येत्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः,
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो,

यतो मन्द्रास्त्वां प्रथमरवर संशेरत इमे ॥
त्रयी साङ्ख्यं योगः पशुपतिमत वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने पर मिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनाना पथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥
महोक्षः खट्वाङ्गम्परशुरजिन भस्म फणिनः,
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धि दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां,
नहि स्वात्मारामं विषय मृगतृष्णा भ्रमयति ॥
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपररतवध्रुवमिदं,
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथम तैर्विस्मित इव,
स्तुवञ्जिह्वेमि त्वां न खलु ननुधृष्ट मुखरता ॥
तवैश्वय यत्नाद्यदुपरिविरञ्चिर्हरिरधः,
परिच्छेत्तु यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः ।
ततोभक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्,
स्वयंतस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्नफलात ।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं,
दशास्यो यद्बाहूनमृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणी रचितचरणाम्भोरुहवलेः,
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥
अमुष्य त्वत्सेवा समाधिगतसारं भुजवनं,
बालात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौविक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितोमुह्यति खलः ॥
यदृद्धि सुत्राम्णो वरद ! परमोच्चैरपि सती,
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन्वरिवसितरि त्वच्चरणयोः,
न कस्याप्युन्नत्यै भवतिशिरसस्त्वय्यवनतिः ॥

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा,
विधेयस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो,
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्,
स्मरःस्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः॥
मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदम्,
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा,
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैवविभुता॥
वियद्व्यापीतारागणगुणितफेनोद्गम रुचिः,
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्ठः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिप्रलयं तेन कृतमित्य-
नेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः॥
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिनगेन्द्रो धनुरथो,
रथाङ्गेचन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि,
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥
हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो,
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा,
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्॥
क्रत सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमताम्,
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलतिपुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः॥
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम्,

ऋषीणामार्त्विघ्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो,
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरम्,
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा॥
धनुपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम्,
त्रसन्तन्तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधपभसः॥
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नायतृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वापुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदिस्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनाद्,
अवैतित्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥
श्मशानेष्वाक्रीडास्मरहर पिशाचाः सहचरा,
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम्,
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि॥
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः,
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादंह्रद इव निमज्यामृतमये,
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किलभवान्।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वंहुतवह,
स्त्वमापस्त्वं व्योमत्वमुधरणिरात्मात्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतुगिरम्,
न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्व न भवसि॥
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपिसुरा,
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः,
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद् गृणात्योमिति पदम्॥
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सह महां,
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम॥

अमुष्मिन्प्रत्येक प्रविचरति देव: श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्नेप्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो,
नम: क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो,
नम: सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः ॥
वहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रवलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौमृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥
कृशपरिणतिचेत क्लेशवश्यं क्व चेदं,
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनीशश्वदृद्धि ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा,
द्वरदचरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥
असितगिरिसमं स्यात् कज्जल सिन्धुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकाल,
तदपि तव गुणनामीशपार न याति ॥
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले,
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो,
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ॥
अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्,
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र,
प्रचुरतरधनायुः पुत्रमानकीर्तिमांश्च ॥
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः,
अघोरान्नापरोमन्त्रो नास्ति तत्त्वगुरोः परम ।

दीक्षा दान तपस्तीर्थंज्ञानंयागादिकाः क्रियाः,
महिम्नस्तवपाठस्य कलांनार्हन्तिषोडशीम् ।।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः,
शशिधरधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्यरोषात्,
स्तपनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।

सुरवरमुनिपूज्य स्वर्गमोक्षैकहेतुं,
पठति यदि मनुष्यः प्रञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः,
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन,
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन,
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशप्रीयतां मे सदाशिव ।।

इति श्रीपुष्पदन्तविरचितं शिवमहिम्नस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

॥ शिवाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम् ॥

शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशि शेखरः ॥
वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नील लोहितः ॥ १ ॥

शंकरः शूलपाणिश्च खट्वांगी विष्णुवल्लभः ।
शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो भक्तवत्सलः ॥२॥

भवः सर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः ।
उग्रः कपाली कामारिरंधकासुरसूदनः ॥ ३ ॥

गङ्गाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः ।
भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥ ४ ॥

कैलासवासी कवची कठोर स्त्रिपुरांतकः ।
वृषाङ्को वृषभारूढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ ५ ॥

सामप्रियः स्वरमयस्त्रयोमूर्तिरनीश्वरः ।
सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ६ ॥

हविर्यज्ञमयः सोमः पंचवक्त्र, सदाशिवः ।
विश्वेश्वरो वीरभद्रो प्राणनाथः प्रजापतिः ॥ ७ ॥

हिरण्यरेता दुऽर्धर्षो गिरीशो गिरीशोऽनघः ।
भुजङ्गभूषणों भर्गो गिरिधन्वा गिरीप्रियः ॥ ८ ॥

कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः ।
मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः ॥ ९ ॥

व्योमकेशी महासेनः जनकश्चारुविक्रमः ।
रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुध्न्यो दिगम्बर ॥ १० ॥

अष्टमूर्तिरनेकात्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ।
शाश्वतः खंडपरशू रजः पाशविमोचनः ॥ ११ ॥

मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययो हरिः ।
पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः ॥ १२ ॥

भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्त्राक्षः सहस्रपात् ।
अपवर्ग प्रदोऽनन्तस्तारकः परमेश्वरः ॥ १३ ॥

एवमष्टोत्तरशतं नाम नामाम्नाय सम्मितम् ।
शंकरस्य प्रिय गौरी जपत्वा त्रैलोक्यमन्वहम् ॥ १४ ॥

प्रेरिता पद्मनाभेन वर्षमेकं प्रयत्नतः ।
आवाप सा शरीरार्धं प्रसादाच्छूलपाणिनः ॥ १५ ॥

यस्त्रिसन्ध्यं पठेच्छम्भो नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
शतरुद्रत्रयावृत्या चैकावृत्या पठेन्नरः ॥ १६ ॥

_इति श्री शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्री शिवापराधक्षमापनस्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसंगात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं माँ,
विण्मूडमूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः ।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुम्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥ १ ॥

बाल्ये दुःखातिरेकोमललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा,
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति ।
नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शंकरं न स्मरामि,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेवशम्भो ॥ २ ॥

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पंचभिर्मर्मसन्धौ,
दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिस्वादसौख्ये निषण्णः ।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ॥ ३ ॥

वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवाधितप्तैः,
पापैर्रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।
मिथ्या मोहभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यम्,
क्षंतव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। ४ ।।

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनंप्रत्यवायाकुलाख्याम्,
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुल विहते ब्रह्ममार्गे सुसारे।
नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यम्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। ५ ।।

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृत गांगतोयम्,
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पे त्वदर्थम्,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। ६ ।।

दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिंगम्,
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। ७ ।।
ध्यात्वा चित्ते शिवाख्य प्रचुरतरधनं नैव दत्त द्विजेभ्ये,
हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गंगतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः,
क्षन्तव्यो मेऽपराध. शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। ८ ।।

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे,
शन्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।
लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शंकर न स्मरामि,
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। ९ ।।

रग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारी,
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित् ।
उन्मन्यावस्थाया त्वां विगतकलिमलं शंकर न स्मरामि,
क्षन्तव्योमेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो ।। १० ।।

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शङ्करे ।
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे ।।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बधरे त्रैलोक्यसारे हरे ।
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ।। ११ ।।

किं वाऽनेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किम् ।
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम् ।।
ज्ञात्वैतत्क्षणभंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः ।
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्री पार्वतीवल्लभम् ।। १२ ।।

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनम् ।
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः ।।
लक्ष्मीस्तोयतरंगभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितम् ।
तस्मान्मां शरणागतं शरणद स्त्वं रक्ष रक्षाधुना ।। १३ ।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा ।
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम् ।।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व ।
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।। १४ ।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवापराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

।। पुष्पांजलि एवं क्षमा-प्रार्थना ।।

ॐ नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ।। ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्यानः सन्ति देवाः ।। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने। नमो वयं वैश्वणाय कुर्महे ।। स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्वणो ददातु । कुबेराय वेश्वरणाय महाराजाय नमः ।।

सेवन्तिका बकुल चम्पकपाटलाब्जैः
पुन्नागजातिकर वीर रसाल पुष्पैः ।

विल्व प्रवालगजकेसर मालतीभि-
स्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद ।।

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन रक्षस्व परमेश्वर ।।

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ।।

इसके बाद नीचे लिखे वाक्य से मृत्तिका चूर्ण करे—

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वैं नमः ।
भवे भवे नाति भवेभवस्वमां भवोद्भवाय
नमो नमः ।
ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः महेश्वराय नमः ॥

मृत्तिका को भली-भांति स्वच्छ कर नीचे लिखे मन्त्र से जल छोड़े—

ततो वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमो बलविकरणाय नमः बलविकरणाय नमो बलाय नमः बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमः मनोन्मनाय नमः ॥

नीचे लिखे हुए दोनों मन्त्रों मे संयोजन और पिण्डी बनावे ।

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्य सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ इति संयोजनम् ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति पिण्डीकरणम् ॥

नीचे लिखे मंत्र को पढ़कर सुन्दर शिवलिंग बनावे—

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ॥ ब्रह्माऽधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्माशिवोमे अस्तु सदाशिवोम् ॥

शिवलिङ्ग बनाकर बाएं हाथ वेदी, तांबे के पात्र अथवा विल्व-पत्र पर अक्षत पुष्पयुंक्त शिवलिङ्ग को नीचे लिखे मन्त्र से स्थापन करे—

ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शूलपाणये नमः ॥

पार्थिव-शिव-पूजन

पार्थिव-शिव-पूजन के लिए उपासक को चाहिए कि प्रातःकाल उठकर आवश्यक क्रियाओं से निवृत्त होकर पवित्र वस्त्र धारण करके उत्तर दिशा में मृत्तिका लाने के लिए जाय। सूर्य को अर्घ्य देकर नीचे लिखे मन्त्र से भूमि की प्रार्थना करे—

ॐ सर्वाधारे धरे देवि त्वद्रूपां मृत्तिकामिमाम् ।
ग्रहिष्यामि प्रसन्ना त्वं लिंगार्थं भव सुप्रभे ॥
ॐ ह्रां पृथिव्यै नमः ॥

फिर नीचे लिखे मन्त्र से मृत्तिका ग्रहण करे—

ॐ उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शताबाहुना ।
मृत्तिके त्वां प्रगृह्णामि प्रजया च धनेन च ॥
मंत्रः ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः हराय नमः ।

मौन धारण किये चुपचाप मृत्तिका लाकर शुद्ध भूमि में रखे और नीचे लिखा श्लोक पढ़े, जल छिड़ककर उत्तर मुख आसन बिछावे ।

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासन् ॥

हाथ में तिल, यव ले नीचे लिखे श्लोक को पढ़ता हुआ। अपनी रक्षा के लिए चारों ओर विघ्नकर्त्ताओं के नाश के लिए छोड़े ।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्न कर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

शिवलिंग स्थापन करके यह संकल्प पढ़े—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुरित्यादि देशकालादिकं स्मृत्वा अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं शुभपुण्यफलप्राप्तिकामनया शिवप्रीतये शिवपार्थिवपूजनमहं करिष्ये ।। ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः पिनाकपाणये नमः ।।

नीचे लिखे मंत्र से आवाहन करे—

कैलासशिखराद्रस्यात्समागच्छ मम प्रभो ।
पूजां जपं गृहीत्वा च यथोक्तफलादो भव ।।
देवदेवं महादेवं सर्वलोकहितेरत् ।
यथोक्तरूपिणं देवं शंभुमावाहयाम्यहम् ।।
ॐ सदाशिव इह स्थितो भव ।।

आवाहन के बाद प्राणप्रतिष्ठा के लिए हाथ में जल लेकर नीचे लिखे मन्त्र से विनियोग करे—

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्टामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरुद्रः ऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणाख्यदेवता ॐ बीजम् ह्रीं शक्तिः क्रौं कीलकं पार्थिवलिग-प्रतिष्टापने विनियोगः ।।

फिर हाथ में अक्षत लेकर नीचे लिखे मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठा करे—

ॐ आं ह्रीं क्रा य र ल व श ष ह हसः शिवस्यप्राणाः शिवस्यजीवाः शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा शिवइहागच्छेहतिष्ट मम पूजां गृहाण :।

हाथ में पुष्प लेकर नीचे लिखे श्लोक से प्रार्थना करे—

स्वस्मिन्शर्व जगन्नाथयावत्पूजां करोम्यहम् ।
तावत्त्वं प्रीतिभावेन लिंगेस्मिन् संस्थितिं कुरु ।।

प्रार्थना के बाद हाथ में फूल अक्षत लेकर ध्यान करे—

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि—निभं
चाँरुचन्द्रावतंसम्
रत्नाकल्पोज्वलाँगं परशुमृग—वराभीतिहस्तं
प्रसन्नं ।।
पद्मासीनं समंतात्स्तुतम—
ममरगणेर्व्यालयज्ञोपवीतम् ।
विश्वाद्यं विश्वद्यं निखिल भयहरं
पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ।।

फिर नीचे लिखे प्रकार से पूजा करे—

ॐ शिवाय नमः । इति पाद्यम् ।।
महेश्वराय नमः । इत्यर्घ्यम् ।।
ॐ शंभवे नमः । इत्याचमनीयम् ।।

नीचे लिखे मन्त्र से पञ्चामृत स्नान करावे—

पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु ।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ।।

नीचे लिखे मन्त्र से जल स्नान करावे—

ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शिवाय च
शिवतराय च ।।

फिर नीचे लिखे मन्त्र पढ़कर वस्त्र, यज्ञोपवीतादि चढ़ावे—

ॐ ज्येष्ठाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ।। ॐ रुद्राय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामी । ॐ कपर्द्दिने नमः पुनराचमनीयं समर्पयामि ।। ॐ कालाय नमः गन्धं समर्पयामि । ॐ फल-

विकरणाय नमः अक्षतान् समर्पयामि ।। ॐ बलविकरणाय नमः विल्वपत्रधतूरादि पुष्पाणि समर्पयामि । ॐ बलाय नमः धूपमघ्रापयामि ।। बलप्रमथनाय नमः दीपं दर्शयामि । ॐ नीलकण्ठाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि । ॐ भवाय नमः ऋतुफलानि समर्पयामि । ॐ मनोन्मनाय नमः आचमनं समर्पयामि ।। ॐ शम्भवे नमः ताम्बूलं समर्पयामि । ॐ त्रिलोकेशाय नमः अभिषेकं करोमि । ॐ शितिकंठाय नमः नीराजनम् । ॐ शिवाप्रियाय नमः दक्षिणाम् । ॐ शम्भवे नमः ।। इति नमस्करोमि ।।

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर नीचे लिखे मन्त्र से पुष्पांजलि अर्पण करे—

हर विश्वाखिलाधर निराधर निराश्रय।
पुष्पाँजलिमिमाँ शंभो गृहाण वरदो भव ।।
ॐ पार्थिवेश्वराय नमः पुष्पाँजलि समर्पयामि ।।

प्रार्थना

रूपं देहि जयं देहि भाग्यं देहि महेश्वर ।।
पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वांकामांश्च देहि मे।।

फिर यथावकाश निम्नलिखित मूल मन्त्र का जाप करे—

ॐ नमः शिवाय ।। अथवा ।। 'ॐ ह्रौं ह्रीं जूं सः शिवाय नमः प्रसन्नपारिजाताय स्वाहा ।।

इस मूलमन्त्र का ११०८ या इससे अधिक जप करे। नीचे लिखे श्लोक से जप समर्पण करे—

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः पूर्वस्याम् ॐ भवाय जलमूर्त्तं नमः ।। ईशान्याम् ।।

ॐ रुद्राय तेजोमूर्त्तये नमः उत्तरास्याम् ।। ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः वायव्याँ ।। ॐ भीमाय आकाश मूर्त्तये नमः ।। पश्चिमायाँ ।। ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः नैऋत्याम् ।। ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नयः दक्षिणस्याम् ।। ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः आग्नेयाम् ।। इत्यष्टमूर्त्तिपूजा ।।

निम्नलिखित श्लोकों से शिवलिंग की प्रार्थना करे—

नमः ओंकाररूपाय वेदरूपाय ते नमः।
अलिङ्गलिङ्गरूपाय विश्वरूपाय ते नमः ।। १ ।।

नमो मोक्षपदे तुभ्यं नमो नादात्मने तथा।
नमः शब्दस्वरूपाय रूपातीताय ते नमः ।। २ ।।

त्वं त्राता सर्वलोकानाँ त्वमेव च जगत्पिता।
त्वं भ्राता त्वं सुहृन्मित्रं त्वं प्रियरूपधृक् ।। ३ ।।

त्वं गुरुस्त्वं गति साक्षात् त्वं देवः पितामहः।
नमस्ते भगवन् रुद्र भास्करामिततेजसे ।। ४ ।।

संसारसागरे मग्नं मामुद्धर शिवाव्यय।
अनेन पूजनेन त्वं वाँछितार्थं प्रदो भव ।। ५ ।।

दण्डवत्प्रणतो भूत्वा स्तुत्वा चैव विशेषतः।
एकाग्रः प्रणतो भूत्वा मन्त्रमेतदुदीरयेत ।। ६ ।।

अङ्गहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं महेश्वर ।
पूजितोऽसि महादेव तत्क्षमस्वाम्बिकापते ॥ ७ ॥
अन्यथासक्तचितेन क्रियाहीनेन वा विभो ।
मनोवक्कायदुष्टेन पूजितोसि त्रिलोचन ॥ ८ ॥
तत्सर्वंक्षम्यतां देव दासे कृत्वा दयां मयि ।

नीचे लिखे हुए मन्त्र से अभिषेक करे—

ॐ देवस्यत्वसवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम् अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिचामि ।

अभिषेक के वाद तिलक करके प्रदक्षिणा करे—

वृषचंडं वृषंश्चैवसोमसूत्रं पुनर्वृषम् ।
चण्डश्च सोमसूत्रश्चपुनश्चण्डं पुनर्वृषम् ॥
यानि कानि च पापानि दुःखानि च महेश्वर ॥
तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे ॥

इसके वाद निम्नलिखित श्लोक से क्षमा प्रार्थना करे—

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वर ॥
यत्पूजितां मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ॥
पूजनं नैव जानामि तत्क्षमस्व महेश्वर ॥

अब अक्षत-पुष्प हाथ में लेकर शिवलिङ्ग का विसर्जन करे—

हरो महेश्वरश्चैव शूलपाणि पिनाक धृक् ।
शिवः पशुपतिश्चैव महादेवेति विसर्जनम् ॥

ईशान सर्वविद्यानामोंकारो भुवनेश्वरः ।
कैलाशे गच्छ देवेश पुनरागमनाय च ॥

अक्षत पुष्प शिवलिङ्ग पर चढ़ा दे ।

अनेन पार्थिवेश्वर पूजनेन श्री सदाशिव प्रीयताम् न मम ।



पूजन-सामग्री

चन्दन, केसर, रोली, कपूर, धूप, कलावा, घी, रूई, दीपक, चावल, तिल, पुष्प, पुष्पमाला, भस्म, रुद्राक्षमाला, कुशा, दूर्वा, बिल्व-पत्र, यज्ञोपवीत, वस्त्र, ध्वजा, मिष्ठान, दूध, दही, मधु, गंगाजल,

शर्करा, सर्वोषधि, तुलसीदल, फल, पान, लौंग, सुपारी, गुलाल पंचमेवा, सुगन्धित तेल-इत्यादि ।

पुष्पाञ्जलि मन्त्र

अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानाद्यद्यत्पूजादिकं मया ।
कृतं तदस्तु सफलं कृपया तव शंकर ॥
तावकस्त्वन्दतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ।
इति विज्ञाय गौरीश भूतनाथ प्रसीद मे ॥

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं प्रभो ॥

महामृत्युञ्जयजपविधिः

तत्र सन्ध्योपासनादिनित्यकर्मानन्तरं भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च कृत्वा प्रतिज्ञासंकल्पं कुर्यात् । ॐ तत्सदद्येत्यादि सर्वमुच्चार्य मासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा मम शरीरे ज्वरादिरोगनिवृत्तिपूर्वकमायुरारोग्यलाभार्थं वा धनपुत्रयशःसौख्यादिकामनासिद्ध्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जयदेवप्रीतिकामनया यथासंख्यापरिमितं महामृत्युञ्जयजपमहं करिष्ये। अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्री त्र्यम्बकरुद्रो देवता, श्री बीजम्, ह्रीं शक्तिः, मम अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ॐ वसिष्ठऋषये नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे । श्रीत्र्यम्बकरुद्रदेवतायै नमो हृदि । श्री बीजाय नमो गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥

अथ करन्यासः । ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट् । ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं अनामिकाभ्यां हुम् । ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मृत्युर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुःसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ॐ ह्रौं ॐ जूंस भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय

ज्वल ज्वल मा रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय करतलकरपृष्ठाभ्यां फट ।। इति करन्यास ।।

अंगन्यासः

ॐ ह्रौं ॐ जूंस ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते: रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ ह्रौं ॐ जूंस भूर्भुव स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये मां जीवय शिरसे स्वाहा । ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुव स्वः सुगन्धिस्पुष्टिवर्द्धनम् ॐ नमो भगव्ते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् । ॐ ह्रौं ॐ जूंस भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रां कवचाय हुम् । ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वा मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः-साममन्त्रत्रयाय वौषट् ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट् ।। इत्यङ्गन्यासः ।।

अक्षरन्यासः

त्र्यं नमः दक्षिणचरणाग्रे । बं नमः, कं नमः, यं नमः, जां नमः दक्षिणचरणसन्धिचतुष्केषु । मं नमः वामचरणाग्रे । हें नमः, सु नमः, गं नमः, धिं नमः, वामचरणसन्धिचतुष्केषु । पुं नमः, गुह्ये । ष्टिं नमः, आधारे । वं नमः जठरे । द्धं नमः, हृदये । नं नमः, कण्ठे : उं नमः, दक्षिण काराग्रे । वां नमः, रुं नमः, कं नमः, मिं नमः, दक्षिणकरसण्धिचतुष्केषु । वं नमः बामकराग्रे । बं नमः. धं नमः, नां नमः, मृं नमः,

वामकक्ष-संधिचतुष्केषु । त्र्यों नमः, वदने । मुं नमः, ओष्ठयोः । क्षीं नमः घ्राणयोः । यं नमः दृशोः । मां नमः, श्रवणयोः । मृं नमः, भ्रुवोः । तां नमः, शिरसि ।। इत्यक्षरन्यासः ।।

पदन्यासः

त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः । सुगन्धिं दृशोः । पुष्टिवर्धनं मुखे । उर्वारुकं कण्ठे । मिव हृदये । बंधनात् उदरे । मृत्यो गुह्ये । मुक्षीय ऊर्वोः । मां जान्वोः । अमृतात् पादयोः ।। इति पदन्यासः ।।

मृत्युंजयध्यानम्

हस्ताभ्यां कलशद्वयामृतरसैराप्लावयन्तं शिरो
द्वाभ्यां तौ दधतं मृगाक्षवलये द्वाभ्यां वहंतं परम् ।
अंकन्यस्तकरद्वयामृतघटं कैलाशकान्तं शिवं
स्वच्छाम्भोजगतं नवेन्दुमुकुटाभातं त्रिनेत्रं भजे ।। १ ।।
मृत्युञ्जय महादेव त्राहि मां शरणागतम् ।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः ।। २ ।।
तावकस्त्वद्गतप्राणस्त्वच्चित्तोऽहं सदा मृड ।
इति विज्ञाप्य देवेशं जपेन्मृत्युंजयं मनुम् ।। ३ ।।

बृहन्मन्त्रः

ॐ ह्रौं ॐ जूंसः भूर्भुवः स्वः—त्र्यम्बकं यजामाहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।। भूर्भुवः स्वरों सः जूं ह्रौं ॐ ।। १ ।।

एतद् यथासंख्यं जपित्वा पुनर्न्यासं कृत्वा जपं भगन्महामृत्युंजयदेवतायै समर्पयेत् ।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ १ ॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥ २ ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घंटां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥ ३ ॥

रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै नमो नमः ।
रुद्रो ब्रह्मा उमा वाणी तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
रुद्रो विष्णुरुमा लक्ष्मी तस्मै तस्यै नमो नमः ।
रुद्रः सूर्य उमा छाया तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
रुद्रः सोम उमा तारा तस्मै तस्यै नमो नमः ।
रुद्रो दिवा उमा रात्रि तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
रुद्रो यज्ञ उमा वेदितस्मै तस्यै नमो नमः ।
रुद्रो वह्निरुमा स्वाहा तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
रुद्रो वृक्ष उमा वल्ली तस्मै तस्यै नमो नमः ।
रुद्रः पुष्पमुमा गन्धतस्मै तस्यै नमो नमः ॥
रुद्रो वेद उमा शास्त्रं तस्मै तस्यै नमो नमः ।
रुद्रोऽर्थं अक्षरा सोमा तस्मै तस्यै नमो नमः ॥
रुद्रो लिङ्गमुमा पीठं तस्मै तस्यै नमो नमः ।

शिवार्चन में अहिंसा की प्रधानता

लिङ्गपुराण में शिवार्चन के समय अहिंसा को प्रधानता देते हुए नीचे लिखे अनुसार कहा गया है—

"शिवार्चन के लिए सदैव वस्त्र में छने हुए जल को प्रयोग में लाना चाहिए। जल में सूक्ष्म जन्तुओं का निवास रहता है। अतः उनकी हिंसा होने की आशंका रहती है, इसी कारण शिवार्चन के लिए फेन रहित नदी का जल पवित्र माना गया है।

किसी वेद के पारगङ्गत विद्वान को त्रैलोक्य का दान करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी कोटि गुना अधिक फल अहिंसा-धर्म का पालन करने से होता है। जीवों पर दया दिखाने वाले लोग ही रुद्र-लोक को प्राप्त होते हैं।

शिवजी के पूजन-अर्चन में केवल पुष्पों की हिंसा ही करनी चाहिए। किसी अन्य प्राणी की हिंसा करना वर्जित है। समस्त त्रैलोक्य के हनन करने का जो बुरा फल कहा गया है, वही फल शिवालय में अथवा शिवजी की पूजा के निमित्त किसी एक प्राणी की हिंसा करने पर हिंसक व्यक्ति को प्राप्त होता है।

1936 से स्थापित
विश्व विख्यात
चिर-परिचित
पुस्तक प्रकाशक
और पुराना भी नाम



देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6